7-78

तेज साप्ताहिक

मनोरंजन टैक्स १ रुपया

दीवाना



चिल्ली लीला - 222



दीवानी चिपकी

काटिये चिपकाइये और मज़ा ल

इस पेड़ पर वी. आई. पी. भूत रहता है

आटोग्राफ लेने रात-बारह बजे के बाद आईये

प्रेम पत्र



रे कॉमरेड चन्द्रशेखर जी,

सादर प्रणाम।

जब से आपने दाढ़ी बढ़ाई तब से मेरे मन में आपकी इज्जत बालों की तरह ती चली गई। इसके बाद आपने जनता पार्टी की अध्यक्षता सम्भाली और पके बाल सफेद होने शुरू हो गये। मुझे हमेशा सफेद बालों से डर लगता है ोंकि यह बुढ़ापे की पक्की निशानी है।

कॉमरेड नाना जी देश मुख का कामराज प्लॉन जनता पार्टी के ऊंचे लीडरों ने ं माना, इससे यह साबित होता है कि उन्हें जवान लोगों पर कोई विश्वास नहीं। पकी जनता पार्टी ने मालवीय की बर्खास्तगी कांड में और आगरे के बाजारों में कुछ हुआ इससे यह साबित होता है कि आपका सिक्का बहुत अधिक देर चलने ता नहीं, जब तक कि आप अपनी पार्टी के पहुँचे हुए लीडरों के हाथ मिलवाने की ाय दिल न मिलवा दें।

आप तो जानते ही हैं कि दिल मिलवाना कोई दिल्लगी नहीं है। इसके लिये नको दिल के डाक्टर इम्पोर्ट करने पड़ेंगे। इसलिये आपकी सेवा में एक सुझाव चाहता हूँ–आज ही सिमको ब्राण्ड खिजाव की शीशी मंगवा लीजिये और ह-शाम उसका प्रयोग कीजिये। ऐसा करने से पहुँचे हुए जनता के नेता आपको वा समझकर आपकी भूलें माफ कर देंगे।

आपका

चितली

ुख्य पृष्ठ पर

ाते की डिजाइन की
ल्दी करो टटोल,
ड़ा भयंकर आ रहा
बूजी कन्ट्रोल,
बू जी कन्ट्रोल,
रीद लो ऐसा छाता।
ाईप पियो मजे से,
ुआ ऊपर को जाता।



दीवाना

ः १७, १८ मई से २४ मई १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादक: विश्व गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ख, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें
छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु०
द्विवार्षिक : ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस



प्रश्न दीवाना के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

सुखराम सिंह तोमर, उज्जैन

प्र० : प्यार महंगा कब पड़ जाता है काका ?

उ० : फरमाइश महबूब की, एक सुबह, दो शाम,
तब बेटा सुखराम जी, हो जाते दुखराम ।

सलीम अहमद, दिल्ली २४

प्र० : तोता मिर्च खाकर भी मीठा बोलता है लेकिन मनुष्य ?

उ० : कड़वा मानव ने रहा सत्ता का ग्रानंद,
तोता मीठा बोलकर, पिंजड़े में है बन्द ।

सैय्यद मनवरअली, जोधपुर

प्र० : यदि कोई लड़की दूर से ग्रांख मार दे तो ?

उ० : ऐसा मालूम होता हमको,
उल्लू बना रही है तुमको ।

महेन्द्र प्रसाद शर्मा, चाईबासा

प्र० : चित्र देखकर ग्रापका, नहीं चैन दिन रैन,
काकी का फोटो मिले, पड़े हृदय को चैन ।

उ० : काकी का फोटो ग्रगर हो जाएगा प्राप्त,
रहा सहा जो चैन है, वह हो जाए समाप्त ।

बजरंग शर्मा, श्री गंगानगर

प्र० : काका जी, दिल का शीशा कब टूटता है ?



उ० : हाँ करके फिर ना करे कोई दिलरूबा क्रूर,
दिल का दर्पण टूटकर हो जाता है चूर ।

सुशील अकेला, खगड़िया

प्र० : लोहे को लोहा काटता है, बुराई को बुराई नहीं ?

उ० : गर्म लोहे को काटती, कोल्ड लोह की धार,
नष्ट बुराई को करे, नेकी की तलवार ।

देवी शंकर शुक्ल, उज्जैन

प्र० : हाल के चुनावों में इंदिरा कांग्रेस की जीत पर ग्रापके विचार ?

उ० : बोले राजनारायण कुछ करिए देसाई,
कांग्रेस (ग्राई) का ग्रर्थ इंदिरा ग्राई ।

केवल बेकरी, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : संकटों का सामना कैसे करते हैं ?

उ० : संकट है घनघोर पर नहीं छोड़ती लक्ष्य,
उदाहरण है इंदिरा, देख रहे प्रत्यक्ष ।

अनिल कुमार, आरा, (बिहार)

प्र० : कहते हैं, ईश्वर भी दो ग्रांखों वाला है, क्या यह सच है ?

उ० : बिन पैरों के चल रहा, सुनता है बिन कान,
ग्रांखें नहीं, पर देखता सब जग को भगवान ।

भुपेन्द्र सिंह, पटियाला (पंजाब)

प्र० : ग्रगर मेरा पत्र ग्रापके पास नहीं पहुंचे तो ?

उ० : मारो डाक विभाग पर, शिकायतों की चोट,
करो शाह ग्रायोग में, इसकी तुरत रपोट ।

चन्द्रकुमार बरनजानी, लखनऊ

प्र० : शराब, शबाब ग्रौर दौलत तीनों मिल जाएँ तो ?

उ० : ईश्वर को नहिं मानता, इन लोगों का वर्ग,
मरने की क्या जरूरत, पृथ्वी पर ही स्वर्ग ।

पुतुल कुमार दुमदुमा, (डिब्रूगढ़)

प्र० : प्यार करना गुनाह क्यों है ?

उ० : प्यार गुनाह बता रहे, उन पर ग्राता तर्स,
प्रेम बिना सभव नहीं, जीवन का उत्कर्ष ।

राजू छाबरिया, नागपुर

प्र० : कुछ धनी व्यक्ति कंजूस क्यों होते हैं ?

उ० : जोड़ जोड़ मर जाएँगे, दान करे ना भोग,
धन के चौकीदार हैं ऐसे लाला लोग ।

दिनेश भटाई 'राजा', इंदौर

प्र० किस मौसम में किससे प्यार करना चाहिए ?

उ० : भगवन ! ऐसा बनाता मेरा जीवन धर्म ।
गर्मी में ठंडी बहू, जाड़ों में हो गर्म ।।

प्र० : सुना है, ग्रापके चाचाजी स्वर्ग सिधार गए हैं, हम शोक मनाने ग्रा रहे हैं ।

उ० : चाचा ग्रपने मर गए, वर्ष हुए पंचास ।
शोक मनाने जाइए ग्राप उन्हीं के पास ।।

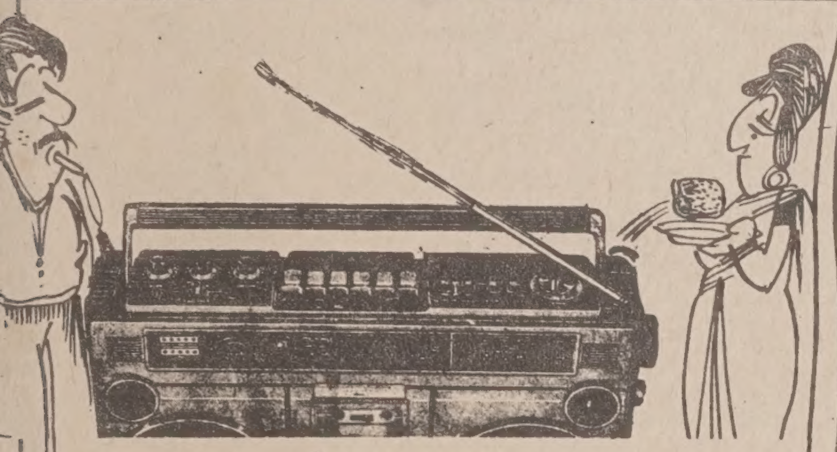
ग्रपने प्रश्न
केवल पोस्ट
कार्ड पर
ही भेजें ।

'काका के कारतूस'
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

आने वाले कल के झटके

बिजली के झटके

आजकल दिन पर दिन बिजली के इलैक्ट्रॉनिक उपकरण तथा कम्प्यूटरों का चलन बढ़ता जा रहा है। एक समय आयेगा कि ये कम्प्यूटर हमारी जिन्दगी पर हावी हो जायेंगे। मनुष्य का कैसे इलैक्ट्रानिक उपकरणों व कम्प्यूटरों से भविष्य के दैनिक जीवन में पाला पड़ने वाला है। वह पढ़िये और फ्यूचर शाक महसूस कीजिए—



टैन इन वन

आजकल तो टू इन वन और थ्री इन वन ही मिलते हैं। टू इन-वन में रेडियो व टेप रिकार्डर होता है। थ्री इन वन में रेडियो, रेडियो टेप व रिकार्ड प्लेयर। अब यह संख्या बढ़ती ही जायेगी, कोई वक्त आयेगा जब हमें टैन इन वन भी मिलेंगे।

टैन इन वन में क्या-क्या हो सकता है? १. रेडियो, २. टेप रिकार्डर, ३. रिकार्डप्लेयर, ४. सिगरेट लाइटर, ५. घड़ी, ६. टोस्टर, ७. कैमरा, ८. मिक्सी, ९. शेवर और १०टी. वी.।

आने वाले समय में बैट्समैन स्कोर बोर्ड पर ही निर्भर नहीं करेगा, अपने साथ कैल्कुलेटर रखेगा। हर रन बनाने पर अपने कैल्कुलेटर पर जोड़ेगा और आउट होने पर पैवेलियन लौटते समय ग्रान्ड टोटल देख लेगा।

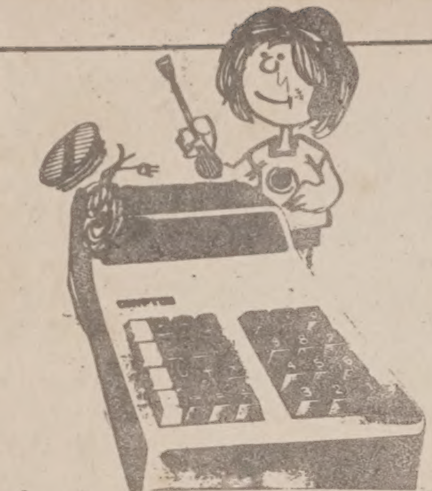


हो सकता है भविष्य के भिखारी भी मशीन से लैस हो जायें। वैसी ही मशीन जैसे वजन करने के लिए रेलवे स्टेशनों पर होती है। दाता दस का सिक्का भीख मशीन में डालेगा और मशीन कार्ड निकाल कर दाता को देगी। कार्ड में 'भगवान तेरा भला करे' की दुआ होगी।





वह दिन भी आयेगा जब बीबी धोबी से पूछेगी, 'कितने पैसे हुये' तो वह जेब से कैल्कुलेटर निकाल कर टिक टिक टिक करके बतायेगा।



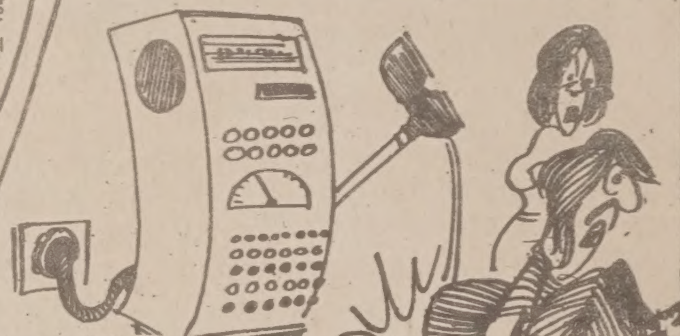
आने वाले समय के बच्चों को गणित की पुस्तकों की जगह बस कैल्कुलेटर खरीदने होंगे। वे हमारी आपकी तरह पहाड़ों के रट्टे नहीं लगायेंगे। गणित के स्थान पर वह बस कैल्कुलेटर मैकेनिज्म सीखेंगे।

ऐसी घड़ियां भी अब बनने लगी हैं जो कलाई पर बंधे-बंधे आपकी नब्ज नाप कर डायल पर यह बताती रहती हैं कि आपकी मानसिक स्थिति कैसी है। खुश हैं या उदास हैं या तनावपूर्ण। एक समय ऐसा आयेगा दो दोस्त मिलने पर जब एक पूछेगा, 'कहो दोस्त कैसे हो? कैसी कट रही? तो दूसरे को घड़ी देख कर बताना पड़ेगा।



लाइ डिटेक्टरों (इलेक्ट्रानिक उपकरण जो यह बताता है कि बोलने वाला झूठ बोल रहा है या सच) के छोटे घरेलू मॉडल मिलेंगे। हर पत्नी उसे खरीदेगी। पति देर से घर आये तो वह लाइ-डिटेक्टर से लैस होकर पति से जवाब तलब करेगी। झूट बोलने पर पति वहीं पकड़ा जायेगा।





भविष्य में प्रेमिका का हाथ मांगने के लिये प्रेमियों को प्रेमिका के पिता से सामना नहीं करना पड़ेगा। उसके घर में रखे कम्पयूटर में वह अपनी जन्मपत्री व योग्यतायें लिख कर डालेगा। कम्पयूटर यदि प्रेमी को विवाह योग्य पाता है तो कम्पयूटर अपने अन्दर फिट टेप को चालू कर शहनाई बजायेगा वर्ना जैसे चित्र में दिखाया गया है।



कवियों और लेखकों को कम्पयूटर मिलेंगे, जिनमें देश भर के पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों की रुचियां, शौक और विचारधाराओं का डाटा पहले ही मौजूद होगा। कवि को अपनी कविता लिख कम्पयूटर में डालने पर कम्पयूटर बता देगा कि यह रचना किस सम्पादक के पास भेजने पर स्वीकृत हो सकती है।

हंसी-खुशी या गम का छा जाना हमारे शरीर के स्नायुओं में विद्युत तरंग प्रवाहित होने के कारण होता है। भविष्य में इन तरंगों को प्रवाहित करने के उपकरण भी मिलेंगे। आपको हंसना हो तो बटन दबा दीजिए हंसी आ जायेगी। इस समय दीवाना के स्थान पर आपको वह उपकरण मिलेंगे' (चूहे पर ऐसे यंत्रों का सफलतापूर्वक परीक्षण किया जा चुका है)।



फिल्मों के टाइटल

और उन पर कसे दीवाने फिकरे

मनोज ने तो कर लिया प्रबन्ध
ROTI KAPADA AUR MAKAAN का।
अब जनता का क्या होगा ?

apnapan
दिखा कर पब्लिक की पाकिट मार रिया है।

Rajshri Productions (P) Ltd.
ANKHIYON KE JHAROKHON SE
बह कर आती नमकीन पानी की सीलन सड़क तक पहुंच गयी है। कमेटी वाले चालान क्यों नहीं करते ?

TRISHUL
चार-शूल ही बना लेता तो भी हमारा क्या बिगाड़ लेता ?

KHATTA MEETHA
नमकीन होता तो भी चल जाता।

COLLEGE GIRL
लिफ्ट मिली नहीं बेचारी को दर्शकों से।

GEMINI PICTURE
GHUNGHAT
हटाने के लिए हमसे मत कहना आज हमारा हनुमान जी के मंदिर जाने का प्रोग्राम है।

GHARAONDA
फंस गई चिड़िया प्यारे ?

फांसी
भुट्टो साहब का नाम कॉस्ट में नजर क्यों नहीं आता ?

HUM KISISE KUM NAHEEN
एक और पांच हजार के सारे नोट बदलवा लिए होंगे तभी अकड़ रहा है।

Rajshri Pictures (P) Ltd.
Paheli
अपनी फिल्म पिटने के बाद बेटा तू पहेलियां ही हल करता रहेगा।

DARWAZA
बन्द रखना माई हमें डर लगता है।

SHATRANJ KE KHILARI
ये अंतर्राष्ट्रीय शतरंज संघ को चंदा देते हैं या नहीं ?

Kasme Vaade
क्यों याद दिला रहे हो कि चुनाव के समय जनता पार्टी के लीडर क्या कहते थे ?

HIMALAY KI GOD MEIN
कुल्फी जम गई या नहीं ?

JADU TONA
COLOR FOR ADULTS ONLY

केवल व्यस्कों के लिए ? बच्चों पर चलता नहीं है यह ?

AAKHRI DAKU

यूं कहो कि आगे गिनती ही नहीं आती है। डाकू तो और भी पैदा होते रहेंगे।

anand ashram

आजकल योगिनों के आश्रमों का ही धंधा रह गया है जिनमें पैसा ही पैसा है।

Mere Huzoor
EASTMANCOLOR

चमचागीरी की भी हद होती है।

AGAR IF

यह फिल्म तो बना ली चलो माफ किया ! अब 'मगर' न बनाना।

Tumhari Kassam

पिक्चर तूने बनाई है हमें बीच में घसीट रहा है ?

Dulhan Wahi Jo Piya Man Bhaaye

बेटा, अगर दूल्हे के बाप को मनभाता दहेज न दिखाई दिया तो दुल्हन बनने की बारी ही नहीं आने देगा।

DUNIYADARI
COLOR

इसी के चक्कर में हिन्दुस्तान वाले पीछे रह गए।

GULZAR'S PALKON KI CHHAON MEIN

पेड़ की छांव में बैठ जाता भाई ! पलकों की छांव में काजल लगने से पैंट गन्दी हो जायेगी।

नकल करने वाले कानूनी शिकंजे में

दीवाना के लोकप्रिय व्यंग चित्रकार कृपा शंकर भारद्वाज के बनाए यह पात्र नाम और शक्लों के साथ भारत सरकार के कापी राइट कानून के अंतर्गत रजिस्टर्ड हैं। इन्हें किसी भी शक्ल में नकल करने या शक्ल बिगाड़ कर कारोबारी धोखा देने वाले के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

मोटू :



कापी राईट रजिस्ट्रेशन नं० ए१९९८३/७८

पतलू :



कापी राईट रजिस्ट्रेशन नं०ए१९९८४/७८

मास्टर घसीटा राम :



कापी राईट रजिस्ट्रेशन नं० ए१९९११/७८

डाक्टर झटका :



कापी राईट रजिस्ट्रेशन नं० ए१९९१२/७८

चेलाराम :



कापी राईट रजिस्ट्रेशन नं० ए१९९८२/७८



आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने वाक्य
केवल पोस्ट कार्ड
पर ही भेजें।

विजय कुमार—चान्दगोठिया : क्या आपको साईकिल चलानी आती है ?

उ० : हमें कुछ चलाना नहीं आता साहब, दुनिया हमें चला रही है।

तहसिनुद्दीन, मोहसिनुद्दीन—जाफराबाद : चाचा जी, चुनाव के समय नेता के सिर पर कौन-सा भूत सवार रहता है ?

उ० : यही कि जनता के सर पर कैसे सवार हुआ जाए।

योगेश कुमार अग्रवाल—खेड़महल, डीमापुर : अपने लिए झूठ बोलना बुरा सही, पर दूसरे की भलाई के लिए झूठ बोलना क्या अच्छा है ?

उ० : अच्छा हो या बुरा हो, यह मत भूलिए कि भलाई में भी कोई बुराई निकल आई तो आदमी की हालत वह हो जाती है, जो अब पाकिस्तान में जुल्फिकार अली भुट्टो की है।

हरगुन जसवानी—मंडला : चाचा जी, चाँद और सितारों की तमन्ना कौन करता है ?

उ० : जिसको रातों की स्याही के सिवा कुछ न मिला हो या जिसने चांद सितारों की हकीकत नहीं जानी है। चाँद की सतह की फोटो में दाग-धब्बे देखकर भी आप किसी चाँद जैसी सूरत की तमन्ना करते हैं, तो इस का मतलब है आप को ऐसी सूरत की तलाश है जिस पर ढेर सारे चेचक के दाग और कील मुहासे हों।

किशोर कुमार धवन—मेरठ : आजकल भगवान छप्पर फाड़कर किसे देता है ?

उ० : जो दूसरों के सर और गिरेबान फाड़ने के हथकंडे जानता हो।

ए० मन्जूर हसन कादरी—बीकानेर : मोटू पतलू इतने अच्छे कलाकार हैं, फिर यह फिल्मों में क्यों नहीं आते ?

उ० : दीवाना के पृष्ठों पर हम उनकी फिल्म ही तो प्रस्तुत करते हैं, गिरगिट की तरह बदलते रंगों में।

ऐनुल 'रोशन'—मुजफ्फरनगर : क्या जवाबी लिफाफा भेजने पर आप रंग भरो प्रतियोगिता का अपुरस्कृत चित्र वापस भेज देते हैं ?

उ० : जी नहीं।

वासुदेव 'राज'—दुलियाजान : मैं झूठ बोलता हूं तो मेरे दोस्त विश्वास कर लेते हैं और सच बोलता हूं तो उसे गप्प समझते हैं। बताइये क्या करूं ?

उ० : जनता की इस बीमारी का इलाज मोरारजी देसाई भी नहीं कर पा रहे हैं, आप क्या करेंगे ?

भगवान दास गोकलानी—ब्यावर : क्या मेरा यह सपना सत्य है जी, जिस में मैंने देखा है कि आप चाची की पूजा कर रहे हैं ?

उ० : जिसके नीचे आकर कोई कुचला जाए उसकी पूजा करने का सपना सत्य हो सकता है तो आप अब सपने में देखेंगे कि हम एक टैक्टर की पूजा कर रहे हैं क्योंकि आज सवेरे हमारी टांग एक ट्रैक्टर के नीचे आ गई थी।

अनिल कुमार—फरीदाबाद : लोग विवाह करके दुखी होते हैं। आप मेरे सर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दीजिये क्योंकि मैंने जिन्दगी भर कुंआरा रहने की कसम खाई है।



उ० : आपके सर पर तो हम हाथ रख दें, पर पहले आप यह बताइये कि आप कुंआरे रहकर भी दुखी हुए तो क्या आप हमारे सर के पीछे ईंट लेकर तो नहीं भागेंगे ?

कान्तिलाल जैन—झाबुआ : एक विदेशी विद्वान का कहना है कि जो कायर होते हैं वही भगवान में विश्वास रखते हैं। उसने यह कैसे पता लगाया होगा ?

उ० : भगवान पर विश्वास न रखने वाले किसी पहलवान ने एक जोरदार झापड़ मार दिया होगा उसके मुंह पर। तब उसने अनुमान लगाया होगा कि जो भगवान पर विश्वास नहीं रखते वे कैसे होते होंगे।

नरेन्द्र कुमार निन्दी—कपूरथला : मुझे यह चिन्ता खाए जाती है कि अगर मैं मर गया तो देश का क्या होगा ?

उ० : जहाँ राजनारायण जैसे 'योग्य' नेता हैं वहां आप जिन्दा रहकर भी कौन से तीर मार लेंगे।

असित शर्मा—सहारनपुर : चाचा जी, नशाबन्दी के समय में भी पुलिस मदहोश को क्यों नहीं पकड़ती ?

उ० : क्योंकि मदहोश का काम नशाबन्दी के हक में जाता है।

सनम—आनन्द पर्वत, नई दिल्ली ५ : आपस की बातों में आप अक्सर हमारी चाची की बुराई करते रहते हैं। अगर यह बात मैं चाची के कानों तक पहुंचा दूं तो ?

उ० आपको चाची के कानों तक पहुंचने कौन देगा। पिछले दिनों दो चार आदमी ऐसे थे जो कोई भी सही बात श्रीमती इन्दिरा गांधी तक नहीं पहुंचने देते थे। तो क्या हम इतना भी नहीं कर सकते कि आपको चाची के कानों तक न पहुचने दें।

परमिन्दर सिंह—विक्रम, अमृतसर : चाचा जी, आपके कितने बच्चे हैं ?

उ० : यह बात हम नहीं बतायेंगे। पिछली सरकार तो इस बात पर केवल नस ही काटती थी। इस सरकार का कोई भरोसा नहीं कि कब गर्दन काटने लगे।

सुनीसूद—होशियारपुर : मूर्ख और बुद्धिमान की क्या पहचान है ?

उ० : पहले आप अपनी पहचान बताइये, फिर हम अपनी पहचान बतायेंगे।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास



मेरा तन डोले मेरा मन डोले मेरे दिल का गया करार रे ये कौन बजाए बांसुरिया ।
बन्द करो बकवास. ये बांसुरी की आवाज नहीं रेल की सीटी की आवाज है ।
कूSSSSSS
मुझे तुमसे कुछ भी न चाहिए ।
बन्द करो बकवास प्यार की बातें करनी हैं तो करो. लेन-देन की बात मैं करूंगा ।
पल भर के लिए कोई हमें प्यार कर ले.झूठा ही सही !
बन्द करो बकवास. पहले नहा के तो आओ ।

मोनिका

ले० संगीता

नया धारावाहिक उपन्यास भाग-१०

'सुना है हजारों पर छा जाता है—किसी की धौंस नहीं सहता।'

'अरे सौभाग्यवती है वह लड़की जिसे ऐसा पति मिल जाए।'

'मेरा तो जी चाहता है कि मुझे ऐसा पति मिले जो सदा मुझ पर हुक्म चलाता रहे।'

'हाय···जब दिन भर हुक्म चलाने के बाद रात को पति प्यार से बाहों में लेता है तो कितना आनंद आता है।'

एक लड़की ने सिसकारी-सी भरी और मोनिका के होंठ और भी सख्ती से भिंच गए। एक लड़की ने चौंककर कहा—

'अरे हां मोनिका···तुमने बताया नहीं···कहां है तुम्हारा पति ?'

एकाएक पीछे से आती हुई एक लड़की ने ठहाका लगाकर कहा—

'मैं बताऊं कहां है ?'

'बताओ-बताओ···।' सब उधर मुड़ गईं।

'मजदूरी करता है दिन भर—आठ रुपए रोजाना पर।'

'क्या कहती हो तुम ?'

'सच कहती हूं—मेरी डैडी की ठेकेदारी में ही तो वह बिल्डिंग बन रही है जहां इस का पति काम करता है।'

उन लोगों ने पलटकर आश्चर्य से मोनिका को देखा लेकिन मोनिका वहां नहीं थी।

मोनिका कार रोककर दौड़ती हुई अंदर दाखिल हुई और अपने कमरे में जाकर तकिए पर गिर के सुबक-सुबककर रोने लगी। उसका जी चाह रहा था कि वह गला फाड़कर जोर-जोर से रोए लेकिन उसकी आवाज ऊंची न उठ रही थी। रोते-रोते मोनिका की हिचकी बंध गई···धीरे-धीरे उस का दिमाग जैसे खाली-सा हो गया···तबीयत हल्की होती गई और फिर न जाने कब इसी हालत में उसे नींद आ गई—उसने सपने में देखा—

कोठी दुल्हन के समान सजी हुई है—दलजीत और मोनिका दूल्हा-दुल्हन बने खड़े हैं। मेहमान आ रहे हैं और वह दोनों मेहमानों का स्वागत कर रहे हैं···उपहार मिल रहे हैं और उनके चेहरे प्रसन्नता से दहक रहे हैं—आंखों में गहरी चमक है—कोई आवाज गूंजती है—

'वाह···क्या जोड़ा है !'

'दोनों ही चांद के टुकड़े मालूम होते हैं।'

'क्यों न हों···दोनों दो महीने का हनीमून···मनाकर आए हैं स्विटजरलैंड में।'

हनीमून···हनीमून···हनीमून दूसरे ही क्षण मोनिका को यूं लगा जैसे वह स्विटजरलैंड की सुन्दर बर्फीली घाटियों में दलजीत की बाहों में बाहें डाले घूम रही है—दलजीत ने प्यार से उसे अपने बहुत निकट कर रखा है और मोनिका के दिल में गुदगुदी-सी हो रही है···धीरे-धीरे वह मोनिका को जोर से लिपटा लेता है और उसके होंठ मोनिका के होंठों से मिल जाते हैं—मोनिका के पूरे बदन में लावा-सा दौड़ने लगता है···दलजीत मोनिका को लेकर बर्फ की चादर पर गिर पड़ता है···दूसरे ही क्षण मोनिका की आंखें खुल गईं।

बेडरूम में उजाला फैला हुआ था और उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था···बदन पसीने से भीगा था···एक-एक धमनी टूटती जा रही थी···साथ ही उसके कानों से आवाज टकराई—

'मेम साहब, आपकी सहेली चंदा मिलने आई हैं।'

मोनिका ने चौंककर देखा···नौकरानी जा चुकी थी···चंदा दरवाजे में घुस रही थी। मोनिका जल्दी से संभलकर बैठ गई। चंदा ने पास आकर कहा—

'मोनी···तू रात को अचानक पार्टी छोड़कर क्यों चली आई थी ?'

'वह···वह···यूं ही···जरा तबीयत घबरा रही थी।'

'तबीयत घबरा रही थी या अकेलेपन से घबरा गई थी—कहां हैं जीजा जी ? जरा हमें भी तो मिलाओ उनसे।'

'वह···वह···अपने घर गए हैं।'

'मोनी···' अचानक चंदा ने गम्भीरता से कहा, तू ऐसी बातें करके हमें तो धोखा दे रही है लेकिन अपने आपको कब तक धोखा देगी ?'

'क···क···क्या मतलब ?'

'मुझे सब कुछ मालूम हो चुका है—तेरी शादी दलजीत से हुई है···मगर तुम दोनों में किसी बात पर अनबन है और तुम अलग-अलग रहते हो। दलजीत मजदूरी करता है···तू यहां ऐश करती है—अभी-अभी नीचे अंकल से मैंने पूछा था कि जब दोनों का दिल मेल नहीं खाता था तो शादी क्यों की ? अंकल ने बताया कि तुम दोनों का पहले से रोमांस था···तुम उसके बच्चे की मां बनने वाली थीं···इसलिए शादी करनी पड़ी।'

'नहीं···' अचानक मोनिका ने होंठ भींच कर कहा, 'यह झूठ है कि मैं उसके बच्चे की मां बनने वाली थी···मैंने उससे इसलिए शादी नहीं की कि मुझे उससे प्यार था···मैंने उससे इसलिए शादी की है कि मैं उसकी गर्दन अपने सामने झुकी देखना चाहती थी—उसका घमंड तोड़ना चाहती थी।'

'क्या कह रही है तू ?' चंदा हड़बड़ा कर पीछे हट गई।

मोनिका ने सारी बात चंदा को बता दी। चंदा आश्चर्य से आंखें फाड़ उसे देखती रही···फिर उसके कंधे पकड़कर गुस्से से बोली—

'पागल लड़की, यह तूने दलजीत की गर्दन झुकाने का काम किया है या अपनी गर्दन झुकाने का ? अरे···नारी निसन्देह मर्द की जननी है···उसका स्तर देवी का है—लेकिन क्या आज तक तूने किसी भी इतिहास में पढ़ा या सुना है कि किसी नारी के सामने मर्द की गर्दन झुकी है ? जिन नारियों

ने मर्दों की गर्दनें अपने सामने झुकाई हैं उन्होंने अपने आपको धोखा दिया है।'

कुछ क्षण रुककर चंदा ने फिर कहा—

'दलजीत आत्मसम्मान रखने वाला व्यक्ति था···उसे इस पर गौरव था तो तेरी इसमें क्या हानि थी···? अरी···वह तेरा खाने नहीं आता था···तुझसे कुछ मांगता नहीं था—तूने उसे खरीदने का प्रयत्न किया ···वह जर्नलिस्ट से मजदूर बन गया किन्तु उसने अपने आपको बेचना स्वीकार नहीं किया—उसे नीचा दिखाने के लिए तूने उससे शादी तक कर ली लेकिन उसे झुकाने में सफल न हो सकी···

'पगली ! तूने एक मर्द की गर्दन झुकाने के लिए अपनी इज्जत के ऊपर इतना बड़ा कलंक लगा लिया कि अदालत के सामने बिन ब्याही मां बन गई। अब जरा यह तो सोच कि अगर दलजीत को यह भेद मालूम हो जाए कि तू मां बनने वाली नहीं है तो क्या वह तुझ पर चार सौ बीस का दावा करके तुझे तलाक नहीं दे सकता ? अगर एक बार तुझे तलाक हो गई तो क्या इस समाज में कोई और तुझे अपनाने के लिए सहमत होगा। लोग विधवा को तो अपना लेते हैं लेकिन तलाक प्राप्त नारी को समाज में वही सम्मान मिलना बड़ा मुश्किल काम है।

'बस···तूने अपनी हठ के लिए जो करना था सो कर लिया···लेकिन मैं समझती हूं तू अपनी सहेलियों में सबसे बढ़कर भाग्यशालिनी है कि तुझे दलजीत जैसा पति मिला—एक ऐसा मर्द जिसकी गर्दन तू आज तक झुकाने में सफल नहीं हो सकी—जरा सोच ऐसा मर्द जीवन की दुर्घटनाओं का सामना कैसे साहस से कर सकता है—हर परिस्थिति को पार कर सकता है, बिना टूटे···बिना घबराए। अरी ऐसे व्यक्ति की तो पूजा करनी चाहिए—और फिर उसके साथ तेरा विधिवत् विवाह हो चुका है—फेरे हो चुके हैं तुम दोनों के। भारतीय नारी तो एक बार जिसकी पत्नी हो गई फिर वही उसका देवता, उसका भगवान, उसका सब कुछ हो जाता है—पगली ! पति वह चीज है जिसके लिए सीता ने चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार कर लिया था ताकि साथ न छूटे—जिसके लिए सावित्री सती हो गई थी। तेरे पिता ने तुझे बड़े लाड-प्यार से पाला है क्योंकि तू अपने पिता की इकलौती बेटी है ना—आज तक तेरे डैडी ने तेरी हर इच्छा पूरी की है—तेरे सामने नौकरों की पक्तियां सिर झुकाए खड़ी रही हैं—कालिज में लड़के और लड़कियां तेरे चमचे बने रहे—लेकिन तूने यह भी सोचा है कि इन सबका तुझसे कोई स्वार्थ था। तेरे नौकर इसलिए कि तू अपने धन के बल पर किसी की भी इज्जत उछाल देती थी—तू इस सबसे खुश थी—दबाना और झूठी चापलूसी कराना तेरी प्रवृति बन गई है। तुझे जीवन में केवल एक ही ऐसा व्यक्ति मिला जो न तेरी दौलत से प्रभावित हुआ न तेरी अमीरी से। तूने हर हथियार प्रयोग करके देख लिया किन्तु तू उसका सिर अपने सामने न झुका सकी—और तू जीवन भर संसार का पूरा धन लेकर कोई कष्ट देकर उसे नहीं झुका सकती—सुन—वह सिर अगर झुक सकता है तो केवल प्यार की गरिमा से—केवल निस्वार्थ और सच्चे प्यार में ही यह शक्ति है—।'



'क्या ?' मोनिका हड़बड़ा गई।

'हां—प्यार और केवल प्यार ही में वह चमत्कार है जिसके आगे भगवान तक ने सिर झुकाया है—तू भी अगर दलजीत का सिर झुकाना चाहती है तो प्यार से उसका मन जीत ले।'

मोनिका के मस्तिष्क में सनसनाहट दौड़ रही थी और आंखें आश्चर्य से फटी रह गई थीं।

□ सेठ अग्रवाल ने कार गली के बाहर छोड़ी और गोलीबार में दाखिल होकर दलजीत की खोली के सामने रुक गए। थोड़ी देर कुछ सोचते रहे—फिर उन्होंने एक ठण्डी सांस ली और आगे बढ़कर दरवाजे पर दस्तक दी। नलिनी ने किवाड़ खोला और सेठ अग्रवाल को देखकर चौंककर बोली—

'बाबू जी···आप···आईए···आईए ?'

सेठ अग्रवाल ने धीरे से पूछा—

'दलजीत कहां है ?'

'जी···वह तो काम पर गए हैं।'

'और तुम्हारी मां ?'

'वह अंदर हैं—उनकी तबीयत कुछ खराब है।'

सेठ अग्रवाल अंदर दाखिल हुए तो नलिनी ने मां से कहा—

'मां···सेठ जी आए हैं।'

'नहीं-नहीं बेटी···' सेठ अग्रवाल थके-थके से बोले, 'मुझे सेठ जी मत कहो···बाबू जी ही कहो।'

मां जल्दी से उठकर बैठने लगीं तो सेठ अग्रवाल ने कहा—

'आप उठिए मत बहनजी···लेटी रहिए···लेटी रहिए।

'जी···ऐसी अधिक खराब नहीं है हालत मेरी।' मां ने बैठते हुई कहा, 'आपने कैसे कष्ट किया···सेठ जी।'

'बहनजी···' सेठ अग्रवाल हाथ जोड़कर बड़ी नम्रता से बोले, 'मैं आपसे प्रार्थना करता हूं···मुझे सेठजी मत कहिए···मुझे आप भाई साहब भी कह सकती हैं।'

मां कुछ न बोलीं···चुप रह गईं···नलिनी भी मौन थी—कुछ क्षण बाद सेठ अग्रवाल ने पूछा—

'बहनजी···आपकी आंखों का अब क्या हाल है ?

'जी···' नलिनी ने उत्तर दिया, 'डॉक्टरों ने मां की आंखों का ऑपरेशन बताया है—कहा है कि अगर जल्दी ही ऑपरेशन न कराया गया तो फिर आंखों की ज्योति आना मुश्किल है—इसलिए भैया ने अब डबल शिफ्ट में काम करना आरम्भ कर दिया है—मैं भी पड़ौसियों का सिलाई इत्यादि का काम करने लगी हूं ।'

'बहनजी···' सेठ अग्रवाल बोले, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आप मुझे अपना भाई मानकर ही अपने ऑपरेशन का खर्चा मुझसे ले लें ।'

'भाई साहब' मां धीरे से बोली, 'मैं आपकी भावना का आदर करती हूं लेकिन मैं मजबूर हूं इसलिए कि मैं जानती हूं दलजीत इस बात पर कभी सहमत नहीं होगा ।'

'मेरी समझ में नहीं आता कि इन बच्चों का झगड़ा कब समाप्त होगा' सेठ अग्रवाल भारी आवाज में बोले—'इधर बहू के बिना आपका घर सूना-सूना लगता है उधर मेरे घर का सारा सुख चैन समाप्त हो गया है । कई दिन से मोनिका ने रो-रोकर बुरा हाल कर लिया है—न खाना खाती है न पानी पीती है—बस, आप लोगों का नाम लेती है और रोए चली जाती है ।'

बोलते-बोलते सेठ अग्रवाल की आवाज भर्रा गई···नलिनी और मां के चेहरे पर भी दुःख था···सेठ अग्रवाल फिर बोले—

'अब तो उसकी यह हालत है कि कहती है जब तक मैं मां जी के चरण न छू लूंगी अन्न का दाना भी मुंह में नहीं रखूंगी ।'

मां एकाएक सिसक पड़ीं···नलिनी की आंखें भी भीग गईं । सेठ अग्रवाल ने सुबकी लेकर कहा—

अब आप ही बताइये बहनजी···मैं क्या करूँ ?'

'मैं क्या बताऊं भाई साहब···मेरा बस चलता तो मैं पहले ही दिन बहू को साथ ले आती और सीने से लगाकर रखती—मेरे कौन से दो चार बेटे हैं—एक ही तो बेटा है जिस के लिए कब से सपने देखती आ रही थी ।'

'बाबूजी···' नलिनी ने कहा, अब तो एक ही तरीका रह गया है ।'

'वह क्या बेटी ?'

'भाभी स्वयं ही यहाँ आ जाएं···।'

'स्वयं···!' सेठ अग्रवाल चौंक पड़े ।

'हां बाबूजी···वह आ जाएं तो भैया उन्हें धक्के देकर तो घर से निकालने से रहे ।'

'ठीक है···' सेठ अग्रवाल ने लम्बी सांस लेकर कहा, 'यह तरीका भी कर देखते हैं ।'

यह कहकर वह हल्की-सी कराह के साथ उठ गए । उनके चेहरे पर गहरी थकन थी···इस समय वह अपनी आयु से अधिक बूढ़े दिखाई दे रहे थे ।

दलजीत ने आज डबल शिफ्ट पर काम किया था और उसे आठ की बजाए पूरे सोलह रुपये मजदूरी मिली थी लेकिन थकान से उसका बदन चूर-चूर होकर रह गया था···। वह बस स्टॉप पर उतरकर धीरे-धीरे चलता हुआ गोलीबार में दाखिल हुआ । महमूद दादा और मुहल्ले के दूसरे लोगों ने रास्ते में उसे सम्बोन्धित किया तो वह केवल 'हूं' 'हां' करके ही रह गया और सीधा खोली में चला आया—

खोली में प्रवेश करते ही उसके नाक से ताजा-ताजा खानों की खुशबू टकराई और उसकी भूख तेज हो गई । उसने नलिनी से कहा—

'नलिनी···लगता है आज तूने खाना बड़े मजे का पकाया है ।'

'हां भैया···तुम जल्दी से मुंह हाथ धोकर खा लो ।'

'नहीं···आज मैं नहाऊंगा···सारा बदन फोड़े की तरह दुःख रहा है···थोड़ा पानी गर्म कर दे ।'

'अच्छा, तुम यह कपड़े बदलो···मैं पानी गर्म करती हूं ।'

कुछ देर बाद पानी गर्म हो गया और दलजीत गर्म और नमक मिले पानी से नहाया तो उसकी काफी थकान दूर हो गई···बस पिंडलियों में थोड़ी दुखन रह गई थी । नलिनी ने थाली आगे रख दी और दलजीत पहला ही कौर मुंह में डालकर खाता हुआ बोला—

'वाह !' आज तो तूने सचमुच ही कमाल कर दिया । खाना बनाने में ।'

'चिंता मत करो भैया···अब रोज ही ऐसे खाने मिला करेंगे ।'

'वाह···मजा आ गया ।'

खाते हुए उसने मां की ओर देखते हुए नलिनी से पूछा ।

'मां कब से सो रही हैं ?'

'आज मां की तबीयत अधिक खराब थी···डॉक्टर ने शाम ही से नींद की गोली दे दी थी ।'

'हूं···' और मां की आंखों के लिए क्या कहा था ?

'आंखों में डालने की दवाई दे दी है···लेकिन कहा है कि जितनी जल्दी ऑपरेशन हो जाए अच्छा है···देर करने से ज्योति के चले जाने का डर है ।'

'हूं···' दलजीत हाथ धोता हुआ बोला, 'देखो कब तक होगा ऑपरेशन ?'

'भैया, मैंने भी कपड़ों की सिलाई शुरू कर दी है—आज पूरे दस रुपये मुझे भी मिले हैं ।'

'अच्छा···पूरे दस रुपये ।'

'हां भैया···अब तुम्हारे और मेरे मिला कर कुल तीन सौ पचास रुपये हो गए हैं—अगर हम दोनों ने यूं ही परिश्रम किया तो अगले हफ्ते तक मां का ऑपरेशन जरूर करवा देंगे ।'

'भगवान करे ऐसा ही हो—भगवान मुझे शक्ति दे तो मैं तीन-तीन शिफ्टों में काम किया करूं ।'

'नहीं भैया···ऐसा नहीं···तुम्हें भी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए ।'——

'अब मां ठीक हो जाए तो हमारा स्वास्थ्य आप ही ठीक हो जाएगा ।'

दलजीत उठा तो उसके होठों से कराह निकल गई । वह चटाई पर बैठकर धीरे-धीरे अपनी पिंडलियां दबाने लगा । नलिनी ने पूछा—

'क्या···पीड़ा होती है भैया ?'

'बस, यूं ही जरा दुख रही हैं ।'

'लाओ···मैं दबा दूं ।'

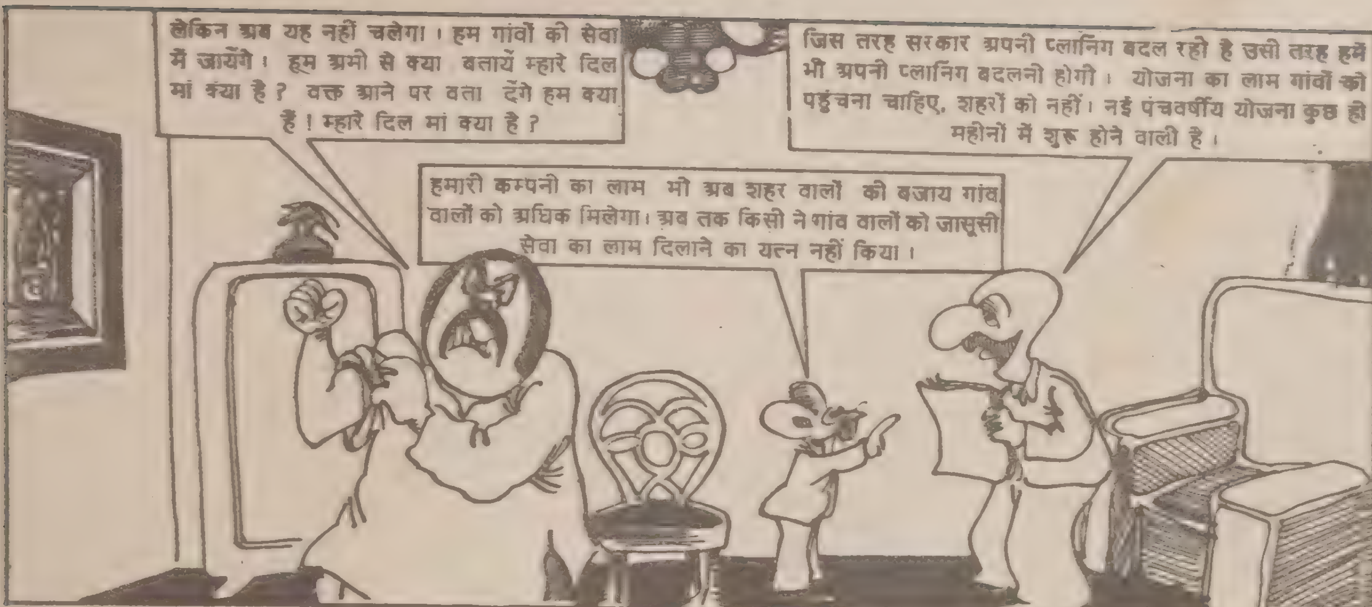
'नहीं···तू क्या दबाएगी···तू क्या थोड़ा काम करती है ।'

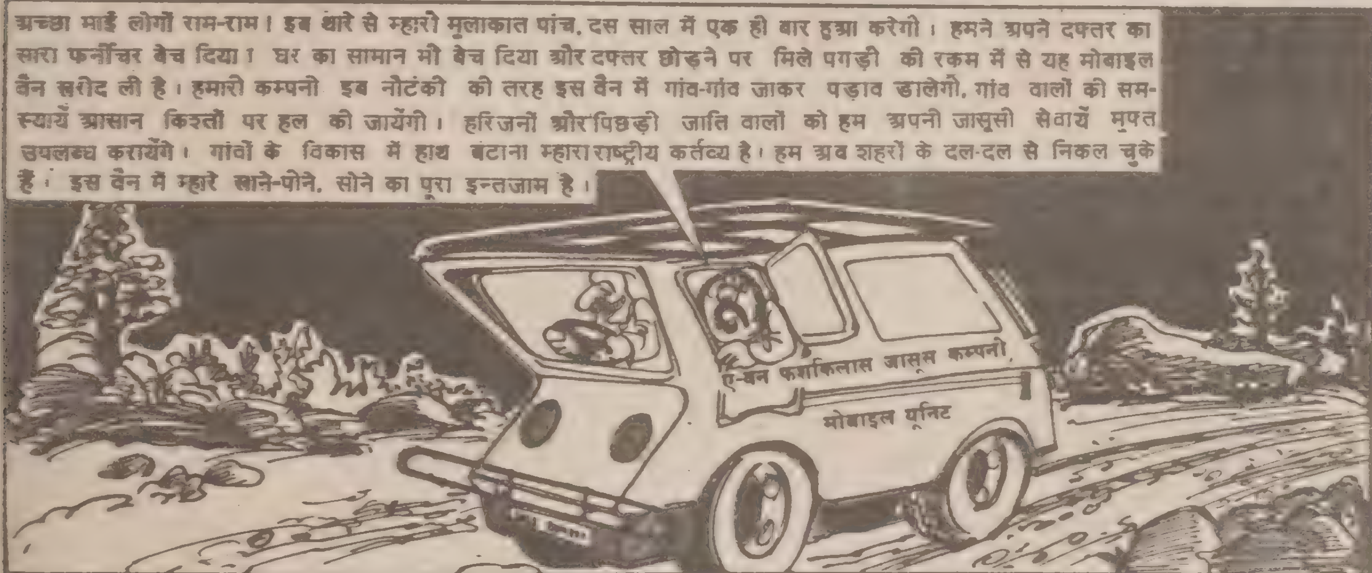
दलजीत लेट गया और नलिनी ने पर्दा खींच दिया । दलजीत ने आंखें बंद कर लीं । दिन भर की थकन···पेट भर खाने का नशा···धीरे-धीरे उसकी आंखें बोझिल होने लगी···उसकी पिंडलियों में हल्की पीड़ा थी उस ने दो-चार बार टांगें कसमसाईं और फिर करवट लेकर लेट गया ।

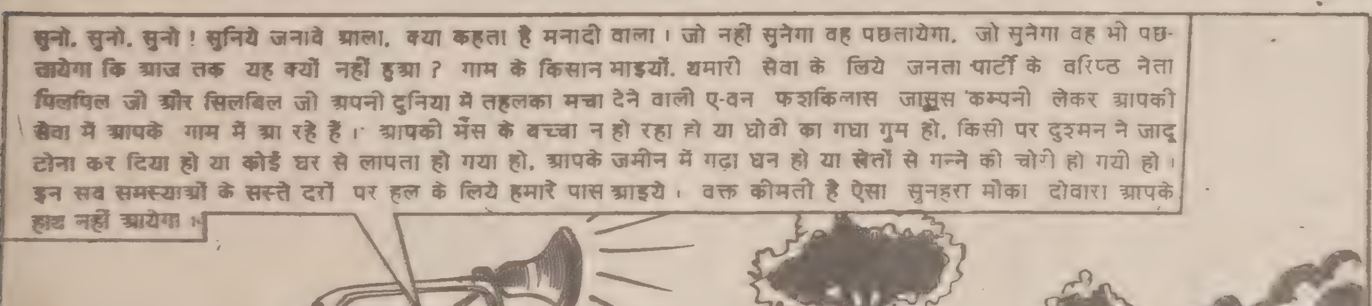
थोड़ी देर बाद उसकी पिंडलियों में शायद फिर ऐंठन हुई और दलजीत ने कराह कर दोनों टांगें चटाई पर पटक दीं···तभी दो कोमल हाथ बढ़े और उसकी पिंडलियों

शेष पृष्ठ ४० पर


कुछ पता है आजकल हिन्दुस्तान में क्या हो रहा है? हम यहां बैठे-बैठे सिगरेट, बीड़ियां फूंकते रहते हो। आजकल गांव के सुधार की बात बोत जोर-शोर से चल रही है। सारी पार्टी की गोरमींट चिल्ला-चिल्ला कर कह रही है कि गांवों की तरक्की ही उनका लक्ष्य होगा।
बिलकुल ठीक बात करी है।
योजना की राशि का ४०%. गांवों की तरक्की पर लगाया जायेगा। हमने खुद क्या किया?
तालियां बजाईं होर क्या किया?
भाइयों और बहनों और चूहों, कांग्रेस सरकार ने अपने तीस साल के शासन में सिर्फ शहरों की तरक्की पर ही ध्यान दिया। बड़े-बड़े कारखानों पर ध्यान दिया। छोटे और गांवों के उद्योगों पर ध्यान नहीं दिया। यही वजह है कि तीस साल के बाद भी आज भी गांव पिछड़े रह गये। लोग पहले से ज्यादा गरीब हो गए। देहातों में नौकरी न मिलने के कारण लोग शहरों की तरफ भागने लगे, गांव उजड़ने लगे। आजतक योजनाओं का रुख शहर मुखी ही रहा जबकि तथ्य है कि लगान का ज्यादा-तर पैसा गांवों से आता है। देश की ७०% जनता गांवों में ही बसती है। पंचवर्षीय योजनाओं का कोई लाभ ग्रामों तक नहीं पहुंचा। पूंजी खाने वाले कारखाने लगाये गये, उस अनुपात में नौकरियां नहीं निकलीं। छोटे-देहाती उद्योगों को बड़े उद्योग खा गये, देहातों को शहर निगल गये।
देखो, हर साल हजारों एम. बी. बी. एस. करके लोग निकलते हैं लेकिन कोई गांव में जाना नहीं चाहता। सबको शहर में नौकरियां चाहियें। भई शहर में तो पहले ही डाक्टर भरे पड़े हैं. गांवों में जाओ जहां लोगों को डाक्टरों की जरूरत है।
जो एक बार शहर में आता है वह मुड़ कर गांव नहीं जाता. शहर में ही अपना काम-धंधा जमाना चाहता है। हर पढ़ा लिखा गांव को नमस्कार करना चाहता है! शहरों की दूषित हवा में अपनी जिन्दगी बर्बाद करता है क्यों?
याड़ो, इब समझ में आया कि हम भी गाम के आदमी हैं। हम यहां सहर में बैठे क्या कर रहे हैं? हम भी तो अपने छोटे से प्यारे-प्यारे गांव को भूल गए हैं।


लेकिन अब यह नहीं चलेगा। हम गांवों की सेवा में जायेंगे। हम अभी से क्या बतायें म्हारे दिल मां क्या है? वक्त आने पर बता देंगे हम क्या हैं! म्हारे दिल मां क्या है?
जिस तरह सरकार अपनी प्लानिंग बदल रही है उसी तरह हमें भी अपनी प्लानिंग बदलनी होगी। योजना का लाभ गांवों को पहुंचना चाहिए, शहरों को नहीं। नई पंचवर्षीय योजना कुछ ही महीनों में शुरू होने वाली है।
हमारी कम्पनी का लाभ भी अब शहर वालों की बजाय गांव वालों को अधिक मिलेगा। अब तक किसी ने गांव वालों को जासूसी सेवा का लाभ दिलाने का यत्न नहीं किया।


अच्छा भाई लोगों राम-राम। इब थारे से म्हारो मुलाकात पांच, दस साल में एक ही बार हुआ करेगी। हमने अपने दफ्तर का सारा फर्नीचर बेच दिया। घर का सामान भी बेच दिया और दफ्तर छोड़ने पर मिले पगड़ी की रकम में से यह मोबाइल वैन खरीद ली है। हमारी कम्पनी इब नौटंकी की तरह इस वैन में गांव-गांव जाकर पड़ाव डालेगी, गांव वालों की समस्यायें आसान किश्तों पर हल की जायेंगी। हरिजनों और पिछड़ी जाति वालों को हम अपनी जासूसी सेवायें मुफ्त उपलब्ध करायेंगे। गांवों के विकास में हाथ बंटाना म्हारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। हम अब शहरों के दल-दल से निकल चुके हैं। इस वैन में म्हारे खाने-पीने, सोने का पूरा इन्तजाम है।
ए-वन फर्शकिलास जासूस कम्पनी
मोबाइल यूनिट


सुनो, सुनो, सुनो! सुनिये जनावे आला, क्या कहता है मनादी वाला। जो नहीं सुनेगा वह पछतायेगा, जो सुनेगा वह भी पछतायेगा कि आज तक यह क्यों नहीं हुआ? गाम के किसान भाइयों, थमारी सेवा के लिये जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता पिलपिल जी और सिलबिल जी अपनी दुनिया में तहलका मचा देने वाली ए-वन फर्शकिलास जासूस कम्पनी लेकर आपकी सेवा में आपके गाम में आ रहे हैं। आपकी भैंस के बच्चा न हो रहा हो या धोबी का गधा गुम हो, किसी पर दुश्मन ने जादू टोना कर दिया हो या कोई घर से लापता हो गया हो, आपके जमीन में गढ़ा धन हो या खेतों से गन्ने की चोरी हो गयी हो। इन सब समस्याओं के सस्ते दरों पर हल के लिये हमारे पास आइये। वक्त कीमती है ऐसा सुनहरा मौका दोबारा आपके हाथ नहीं आयेगा।


आज रात हम यहीं अड्डा जमायेंगे। सूरज भी डूब रिया है। यह जंगे ऊंची भी है, यहां से चारों तरफ़ का नजारा भी दिखाई देता है। पास में दो फर्लांग की निचाई पर एक बड़ा गांव भी है। हम सबसे पहले इसी गांव वालों को अपनी जासूसी सेवायें अर्पित करेंगे!
इस गांव के तो भाग ही खुल गये।
थम सहर के आदमी क्या जानो, खुली हवा में कैम्पिंग का मजा क्या होता है? जहां रात देखी वहीं डेरा जमा दिया। लालटेन जला ली, स्टोव निकाल कर बाल लिया। पहले चाय बनायी फिर जल्दी बनने वाली मसूर की दाल जीरे का तड़का लगाकर चढ़ा दिया! बाद में छः रोटियां सेंक लीं या चावल बना दिये। और अपना स्लीपिंग बैग निकाल कर सो गये।
आ हा हा हा! गांव की यह खुली हवा बरसों बाद सूंघने को मिल रही है। पेट भरा हो तो नशा और भी तेज हो जाता है।
झींगुरों की आवाज में मां की लोरियां सुनाई पड़ती हैं। पास के नाले में गीदड़ एक स्वर में हूऽऽ का शोर मचा रहे हैं जैसे शहर में नौ बजे साइरन बोलता है। मच्छर म्हारे खून को अपने बाप का माल समझ कर पी रिये हैं।
खाना खाने के बाद असली मजा पाइप सुलगाने और गर्म-गर्म काफी पीने में है। शहरों में हमने अपनी जिन्दगी के इतने साल बेकार ही मिट्टी में रोल दिये। गामों के कुदरती वातावरण को भूल कर हमने बड़ा गलत काम किया। सिनेमा के चक्कर में लाइफ फ्लॉप कर बैठे। लेकिन चलो देर आयद दुरुस्त आयद।
दूसरे दिन सूरज निकलने पर
रात कैसे गुजरी इसका पता ही नहीं लगा। मीठे-मीठे सपनों में गोते लगाते सुबह हो गई।
जल्दी उठ कर चाय बनाओ। फिर चाय पीकर हम गाम वालों से मिलने चले जायेंगे। पंचायत के प्रधान से मिल कर उनको अपना परिचय देंगे।
पैंट-पतलून पहन कर जाना होगा या धोती कुर्ता पहनना ठीक रहेगा?
उठो भाई सूरज सिर पर चढ़ गया।
हे राम, इस जासूसी के धन्धे में भी क्या-क्या करना पड़ता है?
पहले तो हमको नाटंकी के कपड़ों में जाना पड़ेगा। गांव वालों को इकट्ठा करने का यही एक तरीका है। जब नेता लोग गाव आते हैं तो उनके भाषण के लिये भी फिल्मी गानों के रकार्ड बजा कर भीड़ इकट्ठी की जाती है। जासूसी के सामान में से फैंसी ड्रेस और ढोलक-हारमोनियम निकाल लो। गाते-बजाते जायेंगे।



अगले अंक में "उड़न तश्तरी" !

आपके पत्र

नया अंक १२ मिला। मुखपृष्ठ पर चिल्ली को होली पुनः खेलते देख चित्त प्रसन्न हो गया। चिल्ली लीला-२१७ बहुत अच्छी लगी। फिल्मी समाचार, सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, स्वर्ग में प्रजातंत्र, यक्ष और दक्ष, पचतंत्र बहुत अच्छे लगे। अन्य स्तम्भ भी रोचक थे। अन्त में मैं यही कहूंगा कि यह एक रोचक पत्रिका है।

राजीव हल—मुरादाबाद-१

दीवाना का अंक १२ प्राप्त हुआ। यूं तो दीवाना का हर अंक बेहद रोचक, मजेदार और लाजवाब होता है लेकिन इस अंक ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। 'इन्हें भी मौका दीजिए' फीचर पढ़ कर आनन्द आ गया और जानवरों की योग्यताओं का पता लगा। 'फिल्मी समाचार' क्या था, एक धमाका था। 'परवीन बाबी का रद्दी का कूड़ा' भी किसी जोरदार धमाके से कम नहीं था। इस अंक की अन्य सामग्री भी काफी अच्छी व मजेदार लगी।

सनम—नई दिल्ली

होली का दीवाना अंक मिला। मुखपृष्ठ देखते ही मन खिल उठा और अन्दर के सभी मसाले देख कर तो मन इतना खुश हो गया की बस हद नहीं। धारावाहिक उपन्यास मोनिका अच्छा है और इस बार तो घसीटाराम और सिलबिल-पिलपिल ने कमाल कर दिया। अगले अंक की प्रतीक्षा—

शिल्पी कपूर—जयपुर

हम 'दीवाना' पत्रिका के नियमित पाठक हैं। होली का विशेषांक अंक ११ मिला। मुखपृष्ठ देखते ही हंसी का फव्वारा छूट पड़ा। इसमें काका के कार्टून, फिल्म वालों की होली, आपस की बातें, सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, बड़े ही दिलचस्प और मजेदार लगे। पचतंत्र स्तम्भ हमें बहुत अच्छा लगता है। ये हमें सदा ही अच्छी सीख देता है। खेल-खेल में व क्यों और कैसे स्तम्भ भी बहुत ही ज्ञान वर्धक होते हैं। सत्य पर विचित्र पृष्ठ चालू रखें।

दयाल—फरीदकोट

दीवाना का अंक ११ काफी लेट, प्रायः समय से दो हफ्ते पश्चात ही प्राप्त हुआ जबकि पिछला अंक समय से ३-४ दिन पहले ही मिल गया था। इस अंक में 'सवाल यह है', फिल्म वालों की होली, छुट्टन-मिट्ठन, होली का एक दिन आदि काफी रोचक रहे। ले० संगीता का उपन्यास मोनिका, पिछले दो उपन्यासों से ज्यादा रोचक है। साथ ही साथ एक शिकायत है कि अधिकतर फीचर रंगीन न थे। इससे काफी निराशा भी हुई। यदि एक रुपये में इतनी सामग्रियां रंगीन देना असम्भव हो तो मूल्य बढ़ा दें। यदि सम्भव हो तो कृपया बिन्दिया गोस्वामी पर लेख छापें। आशा है अगला अंक इससे भी ज्यादा रोचक होगा।

विश्वरूप मिश्र—वाराणसी

दीवाना का अंक ११ मिला। मुखपृष्ठ देखना था कि हम पर रंग पड़ा। फिल्म वालों की होली देखी। सिलबिल-पिलपिल अब की बार टेक्नीकलर की बजाए ब्लैक एण्ड व्हाईट में आई। क्या सेंसर लग गया है। मोटू-पतलू लीला सामान्य है। 'पत्नी का वियोग' लघु कथा पसन्द आई। दीवाना होली के रंगों से भरपूर था। पढ़-पढ़ कर इतने दीवाने हुए कि सुबह की चाय पीना भूल गए। सामान्य ज्ञान के बारे में कुछ पृष्ठ बढ़ावें। आप से निवेदन है कि आप अब दीवाना के पृष्ठ बढ़ाएं क्योंकि दीवाना लोकप्रिय है, तथा जल्दी पढ़ लेते हैं। फिल्म पैरोडी की शिकायत है वह नहीं आती।

दया अरोड़ा—रोहतक

अब तो हर दूसरे सप्ताह पैरोडी छापी जाती है। आशा है आपकी शिकायत दूर हो गई होगी। —सं०

सच मानिए इस युग में दीवाना ही एक ऐसी पत्रिका है, जिसका दाम भी कम है और हमें हास्य की ढेर सी सामग्रियां प्रदान करती है। दीवाना के प्रत्येक एक से बढ़ कर एक अंकों में से अंक नं० ११ पाया। इस अंक में मुझे चिल्ली लीला, मोटू-पतलू, फैंटम और जाल देखना फिक्र तौंसवी जी की पत्नी का वियोग, बेहद रोचक लगी। गुमनाम है कोई, प्रतियोगिता दीवाना के प्रत्येक अंक में दें। वर्ग पहेली बन्द कर दें। फ्रेंडस क्लब में फोटो साफ क्यों नहीं छपते? कृपया फोटो साफ-साफ छापने का कष्ट करें।

सत्यपाल बधावन 'कुकु'—कतरासगढ़

रोते को हंसाने वाला, बहुत इन्तजार करवाने वाला पाठकों का प्यारा दीवाना का अंक ११ दो सप्ताह बाद मिला। इस बार दीवाना करीब १०-१२ दिन लेट छपा इसका क्या कारण है? क्या आपको हम पाठकों की जरा भी चिन्ता नहीं है? आपने कभी सोचा है कि हम किस कदर बेचैनी से अखबार वाले के यहाँ चक्कर लगाते होंगे? मेरी प्रिय पत्रिका दीवाना का प्रबुद्ध पाठक होने के कारण मैं आपको चेतावनी दे देना चाहता हूं कि आगे कभी इतना इन्तजार मत करवाइयेगा। रोशन व्यास त्यागी—इन्दौर

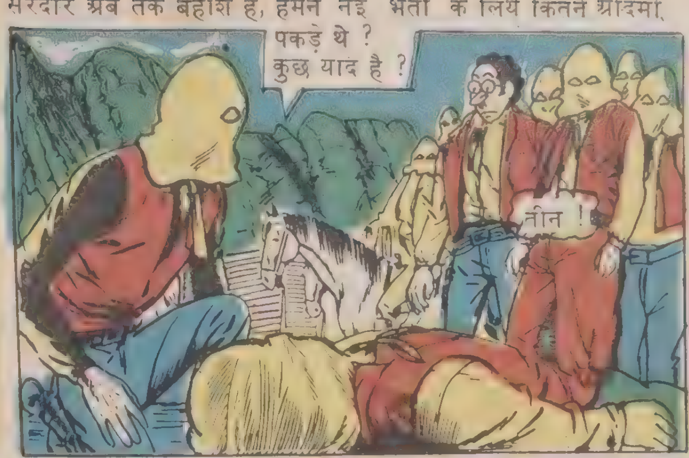
दीवाना का नया अंक प्राप्त हुआ, मैं तो हर बार दीवाना का मुखपृष्ठ देखने के लिए बेचैनी से इन्तजार करता हूं अब किस अंक की तारीफ की जाये, किस की नहीं क्योंकि हर बार एक से बढ़कर एक होता है होली अंक देखा क्या हँसना शुरु कर दिया अंक के पृष्ठ कुल ४२ से ऊपर हैं और खुशी हुई। हमारे पैसे तो मुखपृष्ठ ही वसूल कर देता है एक रुपये का दूध पीने से उतना खून नहीं बनता जितना दीवाना पढ़ने से। दीवाना हमारी सेहत के लिए भी लाभदायक है क्योंकि किसी ने ठीक ही कहा है हंसने से खून बनता है दीवाने की हंसी हमें पूरा हफ्ता नशा देती है।

बबला कपूर—फिरोजपुर



मोटू-पतलू

पिछले दिनों मोटू-पतलू, चेलाराम और घसीटा राम डाकुओं के चंगुल में फंस गये थे । और उन्हें जबरदस्ती डाकू बनना पड़ा था और रेल से एक खजाना लूटते समय मौका पाकर चेलाराम ने डाकुओं के सरदार गौंडा को रेल ईंजन से नीचे दे पटका था । अब आगे का आँखों देखा हाल देखिये ।







इन दुश्मनों का अब क्या किया जाये ?
दूसरी ओर डाकू अब अपने ठिकाने पर पहुंच गये थ।
इन्हें गोली से उड़ा दो।
गोलियां तो हमारे पास बहुत कम हैं, अगर मारना ही है तो इन्हें अंधी गुफा में धकेल दो।
हाँ, इस गुफा में धकेल कर हम आज तक कितने ही दुश्मनों को मार चुके हैं।
आज तक किसी की एक भी हड्डी का पता नहीं चला।
अरे यह क्या शराफत है। बीस साल के तजुर्बे में ऐसी मौत कभी नहीं देखी।
डाकुओं ने बारी-बारी तीनों को अंधी गुफा में धकेलना शुरू कर दिया।
यहाँ तो इनके फरिश्तों को भी पता नहीं चलेगा कि इनकी लाशों का क्या बना।
अंधी गुफा एक गहरा कुँआ थी। जिसमें यह सब भारी पत्थर की तरह तेजी से लुढ़कते जा रहे थे।


वह पाताल में जीवित पहुंचेंगे यह किसी को उम्मीद नहीं थी ।
मौत का यह कुँआ कितना गहरा है, यह भी पता नहीं ।
मुझे तो जीवित बचने की कोई आशा नहीं । ।
यकायक आगे चल कर अंधी गुफा कुछ तंग हुई तो उसमें मोटू का मोटा जिस्म फंस गया ।
क्या कुँए का अंत हो गया ?
मैं जीवित हूं या मर गया हूं ?
गुफा आगे से तंग है और इसमें मेरा मोटा पेट फंस गया है ।
यानी तुम किसी ईंजन के पिस्टन की तरह फंसे हो और पीछे से तुमने मुझे भी रोक लिया है ।
भला हो तुम्हारे मोटापे का इसने हमारी पतली जान बचा दी ।
गुफा की रगड़ ने हमारी रस्सियां काट दी है, पर अब हम क्या करें ?


ऊपर चढ़ना असम्भव है, ऊपर चढ़ भी गये तो वहां डाकू फिर हमारी सेवा के लिये तैयार होंगे ।
नीचे हम कहाँ पहुंचेंगे यह हमें पता नहीं है और आगे फिर गुफा चौडी हो गई और हम कुँए में फेंके पत्थर की तरह नीचे जाने लगे तो पता नहीं कहाँ पहुंचेंगे ।
कहीं भी पहुंचें, हम आहिस्ता-आहिस्ता नीचे उतरने के अलावा और कुछ कर भी तो नहीं सकते ।
पेट पिचका कर नीचे खिसक जा ।
चलो आहिस्ता-आहिस्ता पांव जमा कर अंधेरी गुफा में नीचे उतरते रहो ।
वह सामने उजाला दिखाई दे रहा है, लगता है हम गुफा के मुँह के पास पहुंचने वाले हैं ।
पांव जमाते-जमाते आखिर वह गुफा के खुले मुँह तक आ पहुंचे ।
भगवान का शुक्र है कि जान बच गई ।



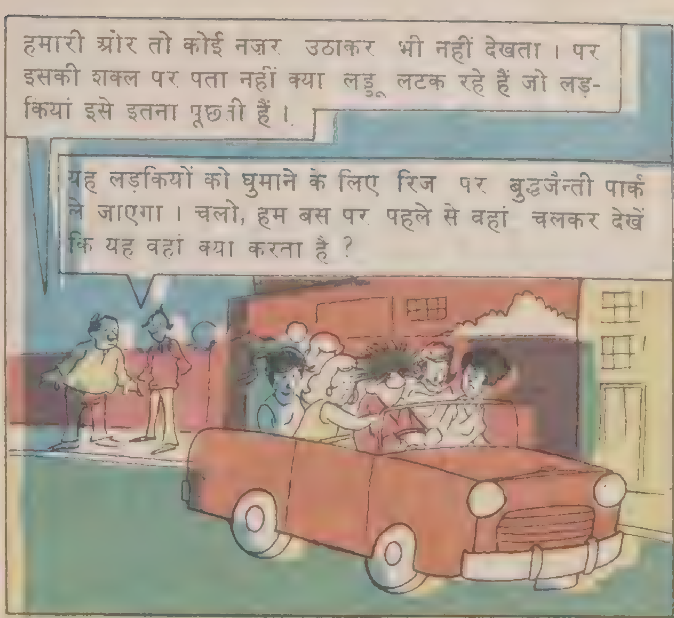
गुफा के मुँह से निकल कर वे एक चट्टान पर पहुंचे तो नीचे एक गहरी खाई थी, जहां से नीचे उतरने या ऊपर चढ़ने का कोई रास्ता नहीं था ।
अब बता कि अब जान बची है या और फंस गई है ।
यहाँ से तो हम कहीं भी नहीं जा सकते, वैसे नहीं मरे हैं तो भूखे प्यासे मर जायेंगे ।
घसीटा राम कहाँ गया ? वह तो हमसे पहले गुफा में धकेला गया था ।
घसीटा राम पतला था, इसलिए वह गुफा में से होता हुआ इसके मुँह से निकल कर सीधा गहरी खाई में गया होगा ।
इसका मतलब है आज मारा गया वह राम का बन्दा ।
यह रस्सी कैसी अटकी हुई है यहाँ ।
अरे इस रस्सी से बंधा हुआ तो बीस साल का तजुर्बा लटक रहा है ।
इसका मतलब है इसकी रस्सियां भी पत्थरों की रगड़ से कटीं और इसके लिये फांसी का फंदा बन गई ।



इस कहानी का अगला खतरनाक भाग आगामी अंक में देखना न भूलिये !

छुट्टन मिट्ठन बच्चा झमूरा

बच्चा झमूरा के पास चाहे कुछ नहीं है, पर उसे इस बात पर बहुत गर्व है कि गर्ल होस्टल की लड़कियां उसकी पक्की फ्रैंड हैं। बस किसी बात पर भी होस्टल की लड़कियों का नाम आये, बच्चा झमूरा की छाती फूलकर दो मीटर चौड़ी हो जाती है। उसके मित्र छुट्टन और मिट्ठन को इस बात से बहुत चिड़ है। पिछले दिनों जब उन्हें पता चला कि होस्टल की लड़कियों ने बच्चा झमूरा से कार में घुमाने की फरमाईश की है, तो वे जलकर कोयला हो गये। पर बच्चा झमूरा को तो जैसे भगवान ने पूरा स्वर्ग दे दिया था लड़कियों से यह फरमाईश करवा कर। उसने किराये पर एक कार ली है और गर्ल्स होस्टल की ओर चल दिया है।







गाड़ी तेज़ चलाओ। और तेज चलाओ। क्या ठेले की तरह हांक रहे हो!
मैं कहती हूं गाड़ी हल्की करो।
नहीं तेज़ चलाओ। और तेज़।
एक्सीलेटर दो
ब्रेक दबाओ
दायें मोड़ो
बायें मोड़ो
पीछे झांको
सामने देखो
और इस हंगामे में गाड़ी एक जगह रुक गई और तमाम लड़कियां झमूरे की गाड़ी से उतर गईं।
क्या बकवास गाड़ी चलाते हो?
गाड़ी चलाते हो, या झक मारते हो?
और अब झमूरा अकेला गाड़ी लिये जा रहा था, पर उसके कानों में वही शब्द गूंज रहे थे।
दायें चलो, बायें चलो, आहिस्ता चलो—तेज चलाओ—और तेज—बहुत आहिस्ता—मेरी सुनो, मेरी मानो—आगे देखो-- पीछे झांको—गाड़ी चला रहे हो या तांगा-
—ऐसे तो बैल गाड़ी भी नहीं चलाते। दायें—बायें—दायें—बायें।
धड़ाम
और इसी चक्कर में बच्चा झमूरे की गाड़ी एक पेड़ से टकरा गई। जब होश आया तो उसके सामने छुट्टन और मिट्ठन खड़े थे।
बच्चा झमूरा बहुत भाग्यशाली है जो इसे इतनी गर्ल्स फ्रेंडस का साथ मिला है।
पर वे सब हैं कहां?
वे पत्थर लेने गई होंगी मेरे सर पर देकर मारने के लिए। मुझे तो तुम इतना बता दो कि मैं कहां हूं?

खेल खेल में

हाय री सरकार तेरे खेल

सरकारी अंधेर गर्दी की हद देखिये। माइकेल फरेरा जो आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलेंड से विश्व बिलियर्ड चेम्पियनशिप जीत कर भारत का नाम ऊँचा कर आये उनके साथ वित्त मंत्रालय ने जो खेल खेला वह भी पढ़िये। उन्हें पूरे टूर्नामेंट के दौरान रिजर्व बैंक ने प्रतिदिन केवल एक डालर खर्च के लिये मंजूर किया—जरा अनुमान लगाइये कि एक विश्व चैम्पियन जेब में केवल एक डॉलर लिये फिरे! किसी अपने जान पहचान वाले को वह एक कप कॉफी पिलाने रेस्ट्रा ले जाना चाहे तो भी यह राशि उसके लिये अपर्याप्त होती। इस प्रकार उन्हें कई बार बहुत लज्जाजनक स्थितियों से गुजरना पड़ा। दूसरी ओर का तमाशा भी देखिये जब सरकारी प्रतिनिधि मंडल विदेशों के दौरे पर जाते हैं तो एक अदने से अधिकारी को भी विदेशी मुद्रा की कमी नहीं होती, पूरा सैर सपाटा किया जाता है बीस पच्चीस डॉलर प्रतिरोज किराये वाले होटल में ठहरते हैं और इस पर भी उनके पास इतना नावां बच जाता है कि दोस्तों व रिश्तेदारों की फर्माइश पर वह लौटते समय ढेर सारा सामान भी खरीद लाते हैं जबकि प्रतिनिधि मंडल के कई सदस्य कभी-कभी अपनी ऊट-पटांग हरकतों से देश का नाम कटा आते हैं—इसी को कहते हैं अंधेर नगरी चौपट राजा- टका सेर भाजी टका सेर खाजा।

भाई साहब, सरकारें बदलती रहेंगी लेकिन खिलाड़ियों के भाग नहीं बदलेंगे।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सुरेन्द्र कुमार खारी—वजीरपुर

प्र०: आपसे यह विनती है कि आप दीवाना में फिल्मी एक्टर की जगह किसी खिलाड़ी का फोटो छापा करें जो कि पूरे पृष्ठ पर हो।

उ०: चाहते तो हम भी यही थे परन्तु क्या करें अभिनेत्री के फोटो के चाहने वाले पाठकों की संख्या ज्यादा है—यही हमारा दुर्भाग्य है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

गोपाल सिंहल—फतहनगर (राज०)

प्र०: राजस्थान क्रिकेट टीम का सर्व श्रेष्ठ बल्लेबाज कौन है?

उ०: पार्थ सारथी शर्मा।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अशोक कुमार अरोड़ा—टोंक

प्र०: न्यूजीलेंड का सबसे अच्छा बल्लेबाज कौन है?

उ०: ग्लैन टर्नर (टर्नर की बीबी भारतीय है)

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अमित कुमार—नवीन शाहदरा

प्र०: एशियाई खेल हमारे देश में क्यों नहीं होते?

उ०: सर्व प्रथम एशियाई खेल तो भारत में ही हुए थे।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी 'उषा'—विक्रमगंज

प्र०: क्रिकेट में गेंदों की स्पीड कैसे ज्ञात की जाती है?

उ०: इसके लिए एक विशेष इलैक्ट्रॉनिक उपकरण प्रयोग में लाया जाता है जो भारत में अभी तक प्राप्त नहीं है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

हरभजन सिंह—धामपुर

प्र०: क्या बेदी अपनी पत्नी को विश्व की सर्व श्रेठ महिला स्पिन गेंदबाजी में बना सकते हैं और बेदी की धर्म पत्नी का क्या नाम है?



उ०: बेदी की पत्नी क्रिकेट खेलने में स्वयं रुची नहीं रखती, उनका नाम ग्लेन बेदा है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्रहलाद जसवानी—मन्डला (म. प्र.)

प्र०: भारतीय क्रिकेट टीम का सबसे कम स्कोर कितना है?

उ०: भारत का न्यूनतम स्कोर ४२ रनों का है जो उसने इग्लंड के विरुद्ध लीडस में ७२-७३ टैस्ट श्रृंखला में बनाये थे।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सीराज मेमन—बैतूल गंज

प्र०: फुटबाल के जादुगर पैले का पूरा नाम क्या है?

उ०: ऐडसन अोरान्तेस द नासीमेन्टो।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सतनाम सिंह—गोरखपुर

प्र०: अगर कोई टीम हार जाती है तो लोग हारने का सारा श्रेय कप्तान को ही क्यों देते हैं, चाहे कितना भी कप्तान ने अच्छा प्रदर्शन किया हो और बखूबी से कप्तानी निभाई हो?

उ०: यह तो दुधारी तलवार है। जब टीम जीतती है तो उसका श्रेय भी तो कप्तान को ही मिलता है। जिन्हें फूल मिलते हैं कांटे भी उन्हीं को मिलते हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

राहुल गोयल—धामपुर

प्र०: भारत ने क्रिकेट में सबसे अधिक रन किस पारी में बनाये तथा कौन से सन् में और उस टीम के कप्तान कौन थे?

उ०: ५३९ रन मद्रास में १९६०-६१ में पाकिस्तान के विरुद्ध (नौ विकेट पर)। भारतीय टीम के कप्तान नरी कंट्रेक्टर थे।

प्रश्न पूछने वाले पाठकों को सूचना

पाठक कृपया खिलाड़ियों के व्यक्तिगत पते न पूछें क्योंकि हम उत्तर नहीं दे पायेंगे। यह कदम स्वयं खिलाड़ियों की माँग पर उठाया जा रहा है क्योंकि यह देखने में आया है कि दीवाना में पते पढ़कर कई शरारती व्यक्ति खिलाड़ियों को उल्टे-सीधे पत्र लिखकर और ऊट-पटांग फरमाइश करके तंग करते हैं जिससे उन्हें बहुत परेशानी और व्यर्थ का सिर दर्द होता है। पाठक हमारी मजबूरी को जानकर क्षमा करें।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बास्केटबाल कैसे खेलें

खिलाड़ी सीमा पार होता है, जब वह सीमा-रेखा पर या बाहर की तरफ फर्श को स्पर्श करता है।

गेंद सीमा-पार होती है, जब वह सीमा-पार खड़े खिलाड़ी या अन्य पुरुष को स्पर्श कर लेती है या सीमा-रेखा पर या बाहर फर्श या अन्य वस्तु को या बैक बोर्ड के अवलम्ब या पीठ को स्पर्श कर लेती है।

गेंद का सीमा पार होना

खिलाड़ी के अलावा किसी अन्य वस्तु को स्पर्श करने के कारण यदि सीमा-पार हो जाती है तो उसे सीमा के बाहर चला जाना माना जायेगा।

अधिकारी स्पष्ट संकेत देगा कि किस टीम द्वारा खेल को पुनः चालू किया जाएगा। गेंद का सीमा-पार होने का निर्णय अधिकारी को स्पष्ट संकेत द्वारा देना चाहिए। यदि इस बात का संदेह हो कि खिलाड़ियों को निर्णय के बारे में गलत फहमी हो गई हो तो अधिकारी गेंद को लेगा तथा निर्णय को स्पष्ट करने तक थ्रो-इन को रोक लेगा। गेंद को सीमा-पार निकालना नियमोलंघन है।

खिलाड़ी को, (जिसके पास गेंद है और जो सीमा के निकट खड़ा है) नगण्य सम्पर्क द्वारा यदि बाहर होने के लिए बाध्य किया जाए, तो अधिकारी उस खिलाड़ी की गेंद थ्रो-इन के लिए सौंपेगा। यदि अधिकारी को संदेह हो तो जम्प-बाल की जानी चाहिए।

विवर्तनी (पिवट)

जब कोई खिलाड़ी गेंद को पकड़े हुए एक या एक से अधिक बार एक ही पैर से इधर-उधर घूमता है, तो उसका दूसरा पैर विवर्तनी-पद (पिवट-फुट) कहलाता है, क्योंकि धरती के साथ इसके सम्पर्क का बिन्दु बना रहता है।

टप्पा खिलाना (ड्रिब्लिंग)

वह टप्पा कहलाता है, जब कि खिलाड़ी गेंद पर काबू पाकर उसे फेंककर, ठेलकर, उछालकर या लुढ़काकर उसमें बल भर देता है और किसी दूसरे खिलाड़ी के द्वारा छूने से पूर्व ही स्वयं उसे छू लेता है। टप्पे में गेंद का जमीन के साथ सम्पर्क होना आवश्यक है। हाँ, गेंद को हवा में भी टपाया जा सकता है अर्थात् खिलाड़ी गेंद को हवा में उछालकर टपा सकता है और धरती पर गिरने से पूर्व ही इसे फिर छू लेता है। ऊपर कहे अनुसार गेंद में बल भरने के बाद खिलाड़ी का टपाना उसी समय पूरा हो जाता है, जब कि वह गेंद को दोनों हाथों से एक ही साथ पकड़ लेता है या एक अथवा दोनों हाथों में गेंद को टिकने देता है। पगों की संख्या की कोई सीमा नहीं जो कि खिलाड़ी रखता है, जब कि गेंद उसके हाथ के सम्पर्क में नहीं है, टपाने की उछालों में वह जितने चाहे पग ले सकता है।

अपवाद निम्नलिखित प्रक्रिया ड्रिबल नहीं होती—गोल के लिए किया गया निरन्तर प्रयास; अन्य खिलाड़ी की अधिकार सीमा से टपाई गई गेंद को प्राप्त करने का प्रयास; या अन्य खिलाड़ी के कब्जे से गेंद को टपाने का प्रयास या पास रोकना और गेंद को प्राप्त कर लेना।

एक ड्रिबल पूरी करने के बाद खिलाड़ी दूसरी ड्रिबल नहीं करेगा, जब तक कि गेंद उसके नियन्त्रण से बाहर होकर अन्य खिलाड़ी को स्पर्श नहीं कर लेती या विपक्षी के बास्केट या बैक-बोर्ड को स्पर्श नहीं कर लेती अथवा विपक्षी द्वारा उसके नियंत्रण से बाहर बेटिंग नहीं की जाती।

दुबारा ड्रिबल करना उल्लंघन है।

गेंद के साथ प्रगति

निम्नलिखित सीमाओं में खिलाड़ी गेंद के साथ किसी भी दिशा में प्रगति कर सकता है—

१. खिलाड़ी जो किसी भी पैर को पिवट-फुट के रूप में प्रयोग करके गेंद को प्राप्त करता है, जब कि वह शान्त खड़ा हो।

२. कोई खिलाड़ी, जो गेंद को प्राप्त करता है, जब कि वह प्रगति कर रहा है या ड्रिबल पूरी कर ले, तब वह अपने आपको रोकने या गेंद से छुटकारा पाने के लिए दो गिनती तक कदम रख सकता है।

प्रथम गिनती तब होती है—

(क) ज्योंही वह गेंद प्राप्त करता है, उस समय उसका कोई पैर फर्श को स्पर्श किये हुए है, या

(ख) ज्योंही कोई पैर फर्श को स्पर्श करता है या ज्योंही दोनों पैर फर्श को एक साथ स्पर्श करते हैं (गेंद प्राप्त करने के बाद) यदि गेंद प्राप्त करते समय दोनों पैर फर्श पर न हों।

दूसरी गिनती तब होती है, जब प्रथम गिनती के बाद एक या दोनों पैर एक साथ फर्श को स्पर्श करें।

जिस समय खिलाड़ी विधिवत् रुकाव पर आता है, उस समय यदि एक पैर दूसरे पैर से अग्रिम अवस्था में हो तो वह पिवट कर सकता है, किन्तु पिछले पैर को केवल पिवट-फुट के रूप में ही प्रयोग कर सकता है, किन्तु यदि कोई भी पैर दूसरे पैर से अग्रिम अवस्था में न हो तो वह किसी भी पैर को पिवट-फुट के रूप में प्रयोग कर सकता है।

३. खिलाड़ी जो गेंद प्राप्त करता है, जब कि वह शान्त खड़ा हो या जो विधिवत् रुकाव पर आता है, जब कि वह गेंद को पकड़े हुए है, तो वह—

(क) पिवट-फुट को उठा सकता है या कूद सकता है, जब वह गोल करने का प्रयास करे या पास देने का प्रयास करे, किन्तु उस के एक या दोनों पैर जमीन को स्पर्श करने के पूर्व गेंद उसके हाथों से छूट जानी चाहिए।

(ख) उसके दोनों हाथों से गेंद छूटने से पूर्व वह ड्रिबल आरम्भ करने के लिए पिवट-फुट को नहीं उठा सकता।

उपर्युक्त सीमाओं से परे गेंद के साथ खेलना उल्लंघन है। (क्रमशः)

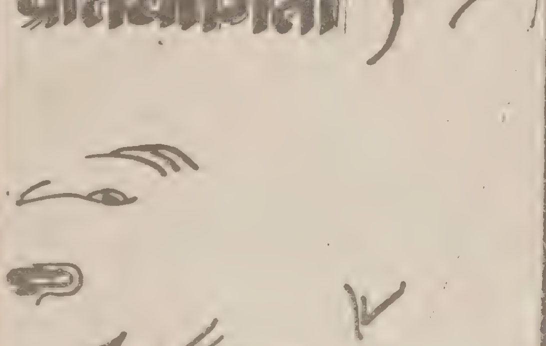
****




फैण्टम और डीयाना की नौकरी
समाचार यून एन टीम आज ताराकीमो में।
लेकिन डियाना को कोई खतरा नहीं है। यू॰एन॰ उसकी जिम्मेदार है…
यह वो जगह है न जहां एक खतरनाक शासक का राज है ?
अपनी-अपनी बैल्ट कसकर बांध लो।
ताराकीमो कितनी सुन्दर जगह लग रही है स्वेन…!
बाहर से तो अच्छा है-नीचे पहुंच कर अन्दर का हाल पता लगेगा।
जनरल तारा यू॰ एन॰ टीम आज पहुंच गई है! हमें पता लगा है कि एक सुन्दर नौजवान लड़की भी है।
बहुत खूब मेजर, हमारे यहां सुन्दर लड़कियों की बहुत कमी है।
मेजर, यू॰ एन॰ टीम क्या उस जहाज में है ?
वे बहुत थक गये होंगे अभी किसी रिपोर्टर को नहीं देखेंगे।
तुम्हारे देश में जो कुछ भी होता हो अब तुम्हें सिर्फ यहां का कानून मानना पड़ेगा।
!
मैं, मेजर इसाम्बू, जनरल तारा का सहायक हूं। मुझे जनरल तारा ने तुम्हारी सेवा के लिए भेजा है। धन्य हमारे भाग्य जो आप यहां पधारे…
यहां के लोग कितने सेवा भक्त है।
हूं SSSSS
तुम लोग पहले आराम कर लो मिस्टर स्वेन लम्बी यात्रा से थक गये होगे…
हमें थकावट नहीं है।
सब तरफ सेना के जवान तैनात हैं ?
आराम के बाद मैं तुम्हें सुन्दर दृश्य, मन्दिर और खेत दिखाने ले जाऊंगा।
हम तो यहां के कैदियों को देखने आये हैं मेजर।
और तुम्हारे जनरल तारा से भी मिलना है।
हां अगर समय बचा तो …वैसे वो, मिस पामर आपको देखने का बहुत इच्छुक है और मिस्टर स्वेन आपको भी।
यह तो लगातार हंसे जा रहा है।
हैलो, मैं मेकग्रेगर हूं 'वर्ल्ड प्रेस से'।
हम अभी-अभी यहां आये है इस समय न ही कोई इंटरव्यू देंगे और न ही कोई रिपोर्ट।
मैं जानता हूं…मैं तो तुम्हें सावधान करने आया था अगर तुम वापस जाना चाहते हो तो बापू के तीन बन्दरों की तरह बन जाओ।
बापू के बन्दर ?
बुरा न सुनो…
बुरा न देखो…
बुरा न बोलो, समझे ?
ऐसा लगता है जो हमने सुना था वह सच ही था।
लगता तो ऐसे ही है…

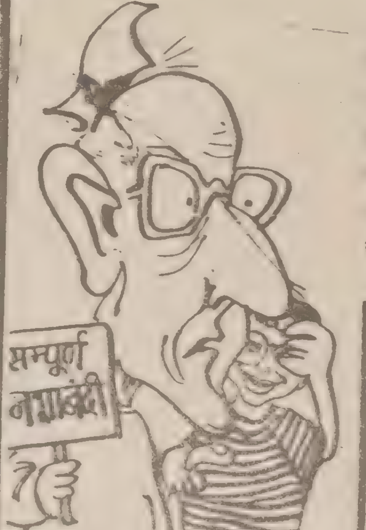


अधूरा चित्र पूरा कीजिए प्रतियोगिता



ऊपर एक जानवर का ग्रधूरा चित्र दिया गया है ग्राप इसे पूरा कर हमें भेजिये । सर्व प्रथम रेखांकन को 5 रू. पुरस्कार ।

ग्रन्तिम तिथि- २७ मई १९७८



१० रुपये जीतिये

सामने दिए गए चित्र में ग्राप देख ही रहे हैं कि चिल्ली मोरार जी देसाई के कान में कोई ऐसी बात कह रहा है जिससे मोरार जी की टोपी उछलने लग गयी है । ग्राप ग्रंदाजा लगाइए कि ऐसी क्या बात चिल्ली कह रहा है । सर्वश्रेष्ठ ग्रनुमान को पुरस्कार । ग्रपनी बात ग्रधिक से ग्रधिक दो लाइनों में कहिए ।

अन्तिम तिथि -२७ मई १९७८

जोड़े पहेलियां

१. एक धातु में दिन जोड़ने पर वह चीज बनेगी जो नहीं रहता ।
२. भोजन के पहले गाड़ी खड़ी करने पर वह जगह बनेगी जहां चीजें बनती हैं
३. नैट में बताने की चीज जोड़ने पर ४२० बनेगा !

क्यों और कैसे

प्र० : मरीचिका क्या होती है तथा कैसे दिखाई देती है ?

उ० : प्रकाश किरण जब किसी पारदर्शी तत्व से छोटा कोण बनाकर टकराती है तो मुड़ने के स्थान पर प्रतिबिम्बित हो जाती है। इसी से मरीचिका का मान होता है। इस प्रकार बने कोण को भीतरी प्रतिबिम्ब का कोण कहते हैं।

रेतीले मैदानों में जमीन की गर्म वायु की परत के ऊपर ठंडी वायु की परत बन जाती है, तब दूर की वस्तु, जैसे पेड़ों के झुंड से चली प्रकाश किरण उल्टी होकर ठंडी वायु की परत के नीचे प्रतिबिम्बित हो जाती है। इस समय इस प्रकाश किरण के कारण पेड़ों का आकार उल्टा दिखाई देता है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि पेड़ों का प्रतिबिम्ब पास की झील के पानी में दीख रहा है इसी से मनुष्य तथा पशु-पक्षी पानी का धोखा खा जाते हैं।

इससे भी अधिक दर्शनीय मरीचिका समुद्र के ऊपर दिखाई देती है। यहाँ मरीचिका के कारण जहाज हवा में उड़ता हुआ दिखाई देता है तथा शहर की बत्तियाँ आकाश में चमकती दीखती हैं। इस प्रकार की मरीचिका का मान तब होता है, जब समुद्र की सतह पर की ठंडी हवा की परत के ऊपर गर्म वायु की परत बन जाती है। इस समय दूर के जहाज या शहर की बत्तियों का प्रतिबिम्ब गरम हवा की परत के नीचे दिखाई देता है। इस समय का दृश्य बहुत ही अजीब होता है।

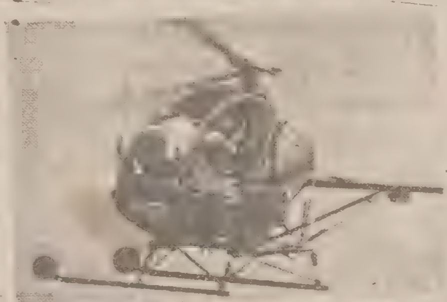
प्र० : हैलीकोप्टर कैसे उड़ता है, तथा आकाश में एक जगह स्थिर कैसे रह सकता है ?

कमलकान्त जैन—माडल टाउन

उ० : हैलीकोप्टर उड़ने वाली मशीनों में सबसे आधुनिक तथा उपयोगी यान है। हैलीकाप्टर पृथ्वी से सीधे ऊपर को उड़ सकता है, इसमे आकाश में मक्खी के समान मंडराने की भी क्षमता है। इसे आगे, पीछे दायें, बायें आसानी से उड़ाया जा सकता है। इसी कारण हैलीकोप्टर को उड़ाने के लिए किसी बड़े स्थान की आवश्यकता नहीं होती। किसी भी सपाट छत अथवा जंगल में थोड़ा सा स्थान साफ कर इसे उड़ाया तथा उतारा जा सकता है।

इन गुणों की वजह से हैलीकाप्टर कई उपयोगों में लाया जाता है। जैसे समुद्रों तथा नदियों में दुर्घटनाग्रस्तों को निकालना, छोटे से स्थान पर भोजन इत्यादि गिराना, फसलों पर दवाई छिड़कना, आदि बहुत से काम हैं जो इन से किये जाते हैं।

हैलीकोप्टर का नाम उड़नेवाली पनचक्की भी है क्योंकि इसके ऊपर लगे पंखे पनचक्की के पंखों के समान घूमते रहते हैं। ये पंखे इस यान के परों का काम भी देते हैं। इस यान के पर हिलने-डुलने वाले नहीं होते। इसे आगे बढ़ने का दबाव भी अपने पंखों से ही प्राप्त होता है। इन पंखों की सहायता से ही ये यान पृथ्वी से ऊपर उठता है। ये रोटर ब्लेड



बनावट में परों तथा पंखों के समान ही होते हैं, परन्तु इनका हवा को काटने का कोण भिन्न होता है, इसी भिन्नता से ये आसानी से हवा को काटकर उड़ता है। इन्हीं के कारण हैलीकोप्टर को हर दिशा में उड़ाया जा सकता है।

इसकी पूंछ में लगा पंखा इसकी काया को पंखों के घूमते समय, घूमने से रोकता है। जब हैलीकोप्टर किसी स्थान पर मंडरा रहा हो तो पूंछ के पंखे की सहायता से इस के पिच्च को बदला जा सकता है।

सन् १५०० में लियोनर्ड विनसाई ने हैलीकोप्टर का चित्र बनाकर इस विचार को व्यक्त किया था। परन्तु फ्रांस के श्री लुई ब्रगुएट ने १६०७ में मनुष्य ले जाने वाले हैलीकोप्टर का निर्माण किया। ये हैलीकोप्टर थोड़ी ही उड़ान भर सकता था। इसके पश्चात सन् १६२८ में एक जर्मन फर्म द्वारा दो रोटरों वाला हैलीकोप्टर बनाया गया। इस के एक वर्ष बाद ही श्री ईगोर सिकोरस्की द्वारा अमरीका में एक रोटर वाले हैलीकोप्टर का प्रदर्शन किया गया। ये हैलीकोप्टर ही आधुनिक यान का मूल रूप था।

प्र० : कैंसर क्या है तथा इससे बचाव कैसे हो सकता है ?

मोहम्मद अली 'गुरानी'—बैतूल

उ० : कैंसर एक ऐसा रोग है जिसके कारण तथा निवारण के बारे में अभी तक पूरी तौर से पता नहीं है।

कैंसर सैल जहाँ उत्पन्न होते हैं वहाँ न बढ़कर शरीर के किसी दूसरे भाग में भी बढ़ सकते हैं। यदि इन कैंसर सैलों को निकाला या समाप्त न किया जाये तो ये रोगी की मृत्यु का कारण भी हो जाते हैं।

शरीर में भिन्न भिन्न प्रकार के सैल हर समय बढ़ते और समाप्त होते रहते हैं परन्तु नये उत्पन्न होने वाले सैल सदा उस ही जाति के होते हैं तथा कार्य भी ठीक उस ही प्रकार करते हैं जैसे पहले सैल करते थे। परन्तु कैंसर सैल शरीर के उस विशेष भाग के सैलों से भिन्न होते हैं और इनका व्यवहार भी शरीर के उस भाग के सैलों से बिलकुल अलग होता है। कैंसर सैल शरीर के जिस भाग में उत्पन्न होने शुरू होते हैं उसी भाग के सैलों का रूप ले लेते हैं, परन्तु खुरदबीन द्वारा इन्हें आसानी से अलग देखा जा सकता है।

कैंसर के ये सैल जब विभाजित होकर बढ़ना आरम्भ करते हैं तो ये पूरे व्यस्क सैल तक न बढ़कर छोटे ही रहते हैं तथा व्यस्क सैल बनकर नष्ट भी नहीं होते बल्कि बढ़ते ही जाते हैं। ये सैल शरीर में इतनी जल्दी बढ़ते हैं कि दूसरे सैलों को नष्ट कर उनके कार्य में बाधा डाल देते हैं।

कैंसर छूत का रोग नहीं है तथा ये एक से दूसरे को नहीं लगता। अभी तक इस रोग को रोकने के लिए कोई विशेष औषधि खोजी नहीं जा पाई है। इस रोग से बचने के लिये अपनी शारीरिक जांच नियमित रूप से करवानी आवश्यक है। चिकित्सा वैज्ञानिक दिन-रात संसार में इस रोग से छुटकारा पाने के लिये खोज कर रहे हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

नाम नहीं सूझा

—फिक्र तौंसवी

उस दिन ठोडी पर हाथ रखे मैं सोच रहा था कि इन्सान ने वेराइटी के लिए खुदा का आविष्कार किया या खुदा ने अकेलेपन से बोर होकर इन्सान का आविष्कार किया? इतने में मेरा घरेलू नौकर रामधन आ धमका और बोला, 'साहब डाकिया यह मैगजीन दे गया है।'

खुदा की समस्या पर मुझे उसका डिस्टर्ब करना अच्छा न लगा। यह कैसा खुदा है जिसने रामधन को पैदा कर दिया है—मैंने उपेक्षा से रामधन को देखा और उपेक्षा ही की दूसरी नजर मैगजीन पर डाली और कहा, 'इसे मेज पर रख दो और यू...' मैंने अंग्रेजी में खामोश गाली दी।

यह मैगजीन पंडित चिनाधारी प्रकाशित किया करता था। वह इसे पिछले दो वर्ष से मुझे भेज रहा था। और मैंने पिछले एक वर्ष से उसे पढ़ना बन्द कर रखा था। रैपर तक नहीं खोलता था। लेकिन पंडित चिंताधारी जब भी मुझसे कहीं टकराते सावधानी से इधर-उधर देखकर धीरे से बोलते, 'इस बार मैगजीन कैसा लगा?

'फाइन!'

मेरा जवाब बहुत संक्षिप्त होता। और संक्षेप उन्हें बहुत पसंद था।

उपेक्षा की तीसरी नजर मैंने मैगजीन पर डाली। पंडित चिंताधारी! हुंह! मुझे इस नाम से नफरत है, मगर उम्मीद के खिलाफ पंडित चिंताधारी मुझे अपना (गहरा) दोस्त समझते थे। और मैं इन्सानियत के नाते उनकी काट नहीं करता था। इन्सानियत मेरी ट्रेजडी थी।'

यह पत्रिका शायद वह मानवमात्र की सेवा के लिए निकाला करते थे। इसीलिए उसमें हाजमे के चूर्ण के नुस्खे से लेकर अकविताएं तक प्रकाशित होती थीं और मुझे वह मानव मात्र का सेवक समझ कर पत्रिका उपहार में भेजा करते थे। उनकी शक्ल-सूरत पापड़-बड़ियों के किसी व्यापारी से मिलती जुलती थी और यह बात मैं कई बार इशारे-इशारे में उनसे कह भी चुका था कि अगर वह साहित्यिक पत्रिका निकालने की बजाय पापड़-बड़ियों का धन्धा शुरू कर दें तो मानव जाति की ज्यादा अच्छी सेवा होगी।

लेकिन इशारों की भाषा समझना वह वक्त खोने के बराबर समझते थे और लगातार पत्रिका मुझे भेजे जा रहे थे।

मैंने नफरत से पत्रिका को पांव के अंगुठे की हल्की-सी ठोकर लगाई और उसे मेज से नीचे गिरा दिया। अकेले में घृणा प्रकट की जाए तो आदमी ज्यादा सुरक्षित रहता है और सभ्य तक कहलाता है।

कुछ सेकन्ड तक सभ्य रहने के बाद मैं फिर खुदा के अस्तित्व पर विचार करने लगा—क्या खुदा ने आदम और हव्वा को जन्नत से इसलिए निकाला था कि वह जमीन पर जाकर पंडित चिनाधारी पैदा किया करें? फिर अगर उसके लिए पैदा होने के सिवा कोई चारा था ही नहीं तो भारत में क्यों पैदा हुआ? टांगानिका में हो जाना। हाजमे के चूर्ण वहां ज्यादा पापुलर हो सकते थे, बल्कि वहां के निवासी तो पंडित चिंताधारी को भी चूर्ण समझ कर खा जाते।

इस तरह नफरत के कारण मेरे चिंतन का स्तर गिरता गया। इससे पहले कि मैं गिरावट की कुछ और मन्जिलें तय करता, रामधन फिर दाखिल हुआ और कमरे की झाड़-पोंछ करते-करते शायद उसकी निगाह नीचे गिरे हुए मैगजीन पर जा पड़ी, जिसे उसने झाड़-पोंछ कर फिर मेज पर रख दिया।

मेरे सारे बदन में आग लग गई। गरज कर कहा, 'तुम फिर क्यों आ गए?'

'जी...झाड़-पोंछ करने...'

'कोई जरूरत नहीं। भाग जाओ। यू...' फिर अंग्रेजी की खामोश गाली।

क्या उसने मुझे चिढ़ाने के लिए मैगजीन उठाकर मेज पर रख दिया था? क्या पंडित चिनाधारी मुझे चिढ़ाने के लिए हर महीने उसे प्रकाशित कर देता है? क्या वह मेरी बजाय वह मैगजीन मेरे मुहल्ले के नाथूराम हलवाई को नहीं भेज सकता? मुझे डाकिए से निवेदन करना चाहिए कि वह यह मैगजीन नाथूराम हलवाई को दे दिया करे और नाथूराम हलवाई से कह दूंगा कि डाकिए को एक पकौड़ा दे दिया करे। इस मैगजीन की गजलों और कहानियों की कीमत एक पकौड़े से ज्यादा नहीं है। हूं! थू!

मेरी सोच का स्तर एक बार फिर गिर रहा था। मगर मैं इस मैगजीन को उसकी औकात तक पहुँचा कर ही दम लूंगा। इसके टुकड़े-टुकड़े करके आग में झोंक दूंगा। मैं इसकी शक्ल तक देखना नहीं चाहता। मैं खुदा की फिलासफी पर गौर करना भूल गया। खुदा भाग गया। गायब हो गया। और वरसे में यह मैगजीन छोड़ गया। खुदा भाग गया। खुदा की रचना, यह मैगजीन यह चूर्ण के नुस्खे, यह बेवजन गजलें और यह पंडित चिनाधारी।। यू... (इडियट!)

गुलेल की-सी तेजी से मैंने मैगजीन को घुमाकर जाने किधर जोर से उछाल दिया। चर, खटाक, छन की मिली-जुली आवाजें उभरीं और मैंने देखा कि शो-केस का शीशा किर्चें-किर्चें होकर नीचे फर्श पर आ गिरा। यह शीशा पिछले हफ्ते पच्चीस रुपए में खरीदा था मगर मेरी निगाह शीशे की बजाय उस मैगजीन पर जा पड़ी। ठोकर खाकर भी उस कमबख्त को कोई खरोंच नहीं आई थी। वह सही-सलामत फर्श पर पड़ा था।

मुझे झेंप महसूस करनी चाहिए थी। बराबर के कमरे से पत्नी की खंकार सुनाई दी। कुछ दिन से हमारे संबंध सुखद नहीं थे और हम दोनों एक दूसरे को हराने या दूसरे की हार का दृश्य देखने के मौके ढूंढ़ा करते थे। क्या उसने मेरी हार का दृश्य देख लिया है? शीशे का टूटना, मेरी हार और यह खंकार! मैंने बौखला कर चटखनी लगा दी। मैगजीन को उठाकर खिड़की के रास्ते गली में फेंक दिया। शीशे की किर्चें चुन लीं। मेरी इस हरकत को केवल पत्नी के फोटो के पीछे बैठे हुए चूहे ने देखा और किसी ने नहीं—(चूहे के सम्बन्ध भी मेरी पत्नी से अच्छे नहीं थे। वह उसे घर का दुश्मन नम्बर एक समझती थी)।

अन्ततः मैंने मैगजीन से पीछा छुड़ाकर इत्मीनान का गहरा सांस लिया। मुझे यह महसूस हुआ जैसे मैंने आबनूसी टांगों वाले पंडित चिंताधारी को उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दिया।

पत्नी की खंकार फिर उभरी। क्या उसने मुझे शीशे की किर्चें चुनते देख लिया है? क्या यह खंकार मुझे गुस्सा दिलाने के लिए है। यह बीवियां, हुंह! बीवियां भी उसी खुदा की रचना हैं, जिसने पंडित चिताधारी की रचना की। पंडित चिताधारी एडीटर नहीं है, चूहा है। मैं उसे धमकी दे दूंगा कि शीशे के पच्चीस रुपए अदा कर दे, वरना...वरना...

'आदाब अर्ज है। क्या श्रीमान जी का ही शुभ नाम फिक्र तौंसवी है?' एक आवाज—रसगुल्ले की तरह मीठी आवाज मेरे कानों में घुल गई।

मैंने निगाह ऊपर उठाई। कोई अजनबी चेहरा था। मैंने कहा, 'शुभ खत्म हो गया, जनाब। अब तो बस नाम ही नाम बाकी है।'

'ही ही ही! मुझे आपसे ऐसे ही जवाब की उम्मीद थी। व्यंगकार हैं न आप? सचमुच नाम के अनुरूप है।' उसने हंसकर कहा, हांलाकि उसे नाराज होना चाहिए था। लोग डिप्लोमैट होते जा रहे हैं। हंसी-हंसी में अपनी कड़वाहट को निगल जाते हैं।

मैंने भी डिप्लोमैटिक मुस्कराहट पैदा की जो तीन सेकण्ड में मर गई, क्योंकि उस के हाथ में वही मनहूस मैगजीन मौजूद था।

'ही ही ही! गली में यह मैगजीन पड़ा था। एड्रेस आप ही का लिखा था। यह आजकल के बदमाश डाकिए! परसों की खबर है ढाई सौ पोस्टल लिफाफे और कार्ड एक गंदे नाले में तैरते मिले। किसी डाकिए ने...'

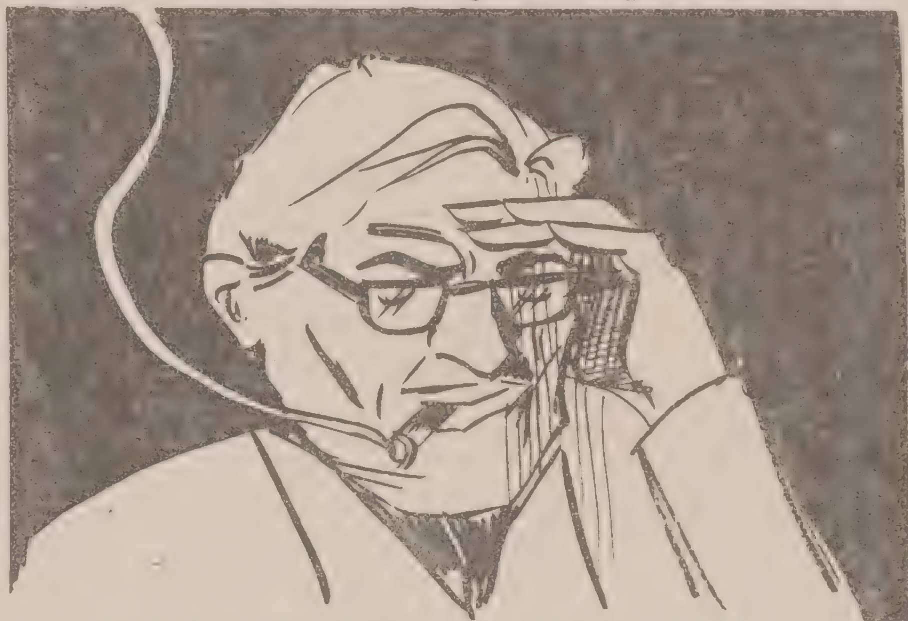
'डाकिए का कोई कसूर नहीं।' मैंने बात काटी।

'तो फिर आपके घरेलू नौकर की गलती होगी। झाड़ू देने वाली...देखिए न? आप न जाने किस शौक से ऐसे मैगजीन मंगाते होंगे। इसलिए मैंने अपना नैतिक कर्तव्य समझा कि मैगजीन आपकी सेवा में पेश कर आऊं।'

'मैं उससे कहना चाहता था कि अपनी नैतिकता का प्रोपगंडा बन्द करो और दफा हो जाओ। लेकिन मुहब्बत का तकाजा यह नहीं था, इसलिए कह दिया, तशरीफ रखिए। चाय पीजिए।' (हम इन्सान अपने आप से झूठ बोलने में बड़े कुशल होते हैं!)

उसने भी अपने आप से झूठ बोला, 'आपका दर्शन मेरे लिए चाय के कप से कहीं ज्यादा है।' कहकर उसने मैगजीन यूं आदर के साथ मेरी तरफ बढ़ाया, जैसे किसी शहंशाह को नजराना पेशकर रहा हो।

शहंशाह ने न चाहते हुए नजराना स्वीकार कर लिया। अगर वह चाय के कप के लिए रुक जाता तो मेरी मानसिक परेशानी का तमाशा न जाने क्या रंग लाता। मैंने उसका नाम पूछना भी उचित नहीं समझा कि कहीं जवाब में वह यह न कह दे कि मुझे पंडित चिताधारी कहते हैं। ईश्वर ने कदम-कदम पर पंडित चिताधारी बिछा रखे हैं।



अब उस घर में बैठे रहना अपमानजनक लग रहा था। या तो यह मैगजीन इस घर में रहेगा या मैं। यह साहसपूर्ण फैसला कर के मैंने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने, आंखें बन्द करके मैगजीन को मरा हुआ चूहा समझकर बगल में दाबा और बाहर सड़क पर आ गया। सड़क का हर कण जैसे कह रहा था—'सड़क बहुत साफ है। मैगजीन से इसे गंदा न कर देना।'

सड़क के इस रवैए से घबराकर मैंने स्कूटर वाले को आवाज दी। एक मोटे-ताजे सरदार जी उसके ड्राइवर थे। बोले, 'कहां जाइएगा, बाबू साहब जी?'

'जहन्नुम में।'

'वहां तो सीटें पूरी हो चुकीं।' ड्राइवर में पंजाबी व्यंग्य जागा।

मैं उससे कहना चाहता था—'तो फिर जहन्नुम के दूसरे रूप पंडित चिताधारी के घर ले चलो। लेकिन फिर सोचा कि ड्राइवर पंडित चितधारी का अता-पता पूछेगा। इसलिए कहा, 'तुम चलो, जहां मेरा मूड आएगा, उतर जाऊंगा।'

'सरदार जी ने मुझे मूड का अर्थ समझाया कि हर मूड का अलग-अलग किराया होता है। मैंने उसके बताये हुए अर्थ से सहमति प्रकट की। सोचा, पंडित चिताधारी के घर जाकर उतरूंगा और उससे कहूंगा, 'पहले इस स्कूटर का किराया अदा कर दो। और फिर आपकी सूचना के लिए सेवा में निवेदन है कि मैं भारत छोड़कर कुस्तुनतुनिया जा रहा हूं। इसलिए मैगजीन भेजना बन्द कर दो।'

रास्ते में इसी तरह से कई इन्तकामी प्रोग्राम बनाता रहा, जो मेरी अच्छी रुचि को पसन्द न आए, इसलिए एक वीरान चौक पर पहुंचकर कहा, 'यहीं रोक दीजिए, सरदार जी।'

मुंह मांगा किराया अदा करके जब चलने लगा तो सरदार जी ने पीछे से आवाज दी, बाबू साहब जी! आप अपनी यह कोई कीमती चीज सीट पर भूले जा रहे हैं।'

मैंने हाथ के इशारे से कह दिया, 'आप पढ़ लीजिएगा, सरदार जी।'

'ओए बादशाहो, मैं पढ़ा लिखा होता तो क्या यह स्कूटर चलता। ले जाइए। मैं पराई अमानत नहीं रखना चाहता।' और लपककर जैसे सरदार जी मुझ पर हमला करने के लिए बढ़े और मेरे कोट की जेब में

पूरा पंडित चिंताधारी ठूंस दिया। फिर सर-दार जी ने इत्मीनान का गहरा सांस लिया, जो मेरे हलक में जाकर अटक गया।

वीरान चौक के पूर्वी कोने पर एक टूटा फूटा ट्रक खड़ा था। बिजली की सी तेजी से नया ख्याल मेरे दिमाग में उभरा कि जल्दी से उस ट्रक के पीछे जाकर यह मैगजीन फेंक आऊं और फिर···मैं ट्रक की तरफ इस तरह बढ़ा कि जैसे मैं कोई चोर हूं और ट्रक के पीछे गड्ढा खोदकर चोरी का माल दबाने वाला हूँ।

जैसे ही ट्रक के नीचे पहुंचा एक हिप्पी-नुमा नोजवान स्टूडेंट पर नजर पड़ी जो वहां दुबका हुआ अपनी गर्ल फ्रेंड का चुंबन ले रहा था। मैंने जल्दी से आंखों पर हाथ रख लिया और कहा, 'आई एम वेरी सौरी!' और उलटे पांव इस तेजी से भागा कि नोज-वान जोड़े के यह वाक्य भी न सुन सका, 'दैट इज आल राइट सर।'

चाहिए तो यह था कि इश्क को टूटे फूटे ट्रक के घटिया स्तर पर उतरते देखकर मैं ठण्डी आहें भरता और उस रोमांटिक जोड़े से हमदर्दी दिखाता, लेकिन मेरी अपनी हालत टूटे-फूटे ट्रक से बुरी हो रही थी। इसलिए इश्क की गिरावट को वहीं ट्रक के पीछे छोड़कर मैं तेजी से चल पड़ा। एक ड्यूटी कांस्टेबिल ने मेरी तरफ शक भरी नजरों से देखा हांलाकि मुझसे अभी जुर्म नहीं हुआ था, फिर भी सोशल कस्टम के अनुसार जुर्म की सम्भावना पर भी वह मुझ से रिश्वत मांग सकता था। एक पल के लिए मैंने सोचा भी कि अगर मैं उसे दो चार रुपए रिश्वत दे दूं और उसके बदले में वह मुझसे मैगजीन ले ले तो सौदा मंहगा नहीं। लेकिन अगर दुर्घटना यह न हुई कि कांस्टेबिल ईमानदार निकला तो···

मेरी नजर फुटपाथ पर गड़े हुए म्यूनिसिपैलिटी के एक कूड़ादान पर पड़ी जो दूर से ऐसा यतीम मालूम हो रहा था मानो भीख के लिए स्थाई रूप से हाथ पसारे खड़ा हो। उस पर मोटे शब्दों में अंकित था: 'कूड़ा करकट यहां फेंकिए। अपने शहर को साफ रखिए।'

'गुड आइडिया! कूड़ा-करकट। यह मैगजीन—कूड़ा-करकट, पंडित चिंताधारी से शहर को साफ रखना चाहिए। म्यूनिसि-पैलिटी की सूझ-बूझ पर मैं फड़क उठा। शहरियों के दुःख दर्द का उसे कितना ख्याल है। वैल्फेयर स्टेट की म्यूनिसिपैलिटी को ऐसा ही होना चाहिए और वैल्फेयर की इस खुली दावत पर मैं अपने आप उस कूड़ेदान की तरफ खिंचा चला गया। कूड़ेदान के पास एक साहब खड़े पान की पीक उगल रहे थे। मैं अलग खड़ा रहा।

पीक से निबटकर वह बोले, आइए आपको क्या फेंकना है?'

उसे अपने कूड़े-करकट का नाम बताने में समझदारी नहीं थी, इसलिए मैंने कहा, 'ही ही ही।'

न जाने उन्होंने इस अस्पष्ट 'ही ही' का क्या मतलब निकाला, बोले, 'ही ही ही! कोई प्राइवेट कूड़ा-करकट होगा। लेकिन कोई हर्ज नहीं साहब! मेरी आंख बचा कर फेंक दीजिए। कल भी एक श्रीमती जी अपना नाजायज बच्चा फेंक गई थीं। ही ही ही!'

अपने ही वाक्य की जुगाली करता हुआ वह चला गया लेकिन मुझे जैसे बिजली का एक शॉक-सा लगा—क्या वह मैगजीन भी एक नाजायज बच्चा है? मेरे हाथ कांप उठे। मैगजीन नीचे फुटपाथ पर जा गिरा, जिसे मैंने सचमुच नाजायज बच्चा समझ कर तेजी से उठा लिया कि कोई शरीफ आदमी देख न ले। फिर उसे बगल में दबा कर मैं बिना सोचे-समझे किसी भी तरफ चल दिया। चलना क्या, बाकायदा भागने लगा।

भागते-भागते अचानक ख्याल आया कि मैं तो हार स्वीकार करने की मंजिल की तरफ भाग रहा हूं। पंडित चिन्ताधारी मुझे खुली मात दे चुका था। उसका बड़प्पन मेरे माथे का पसीना बन गया। मैं रुक गया। खुदा के उस आविष्कार के सामने नाचीज बन्दे को सजदा करना जरूरी था। खुदा ने अपनी हर रचना में कोई न कोई बड़ाई छुपा रखी है। उसकी कोई रचना न वैरायटी के लिए है, न अकेलेपन की बोरियत दूर करने के लिए।

शर्म से सर झुकाए मैं धीरे-धीरे कदम उठाता घर की तरफ बढ़ रहा था कि एक लैटर-बक्स से टकराया—टक्कर—लैटर-बक्स—पंडित चिन्ताधारी—कौंदे की तरह फिर पंडित चिन्ताधारी मेरे जेहन से टकराया और मैंने···मैंने···

···और मैंने जल्दी-जल्दी मैगजीन पर से अपना एड्रेस काटा। पंडित चिन्ताधारी का एड्रेस लिखा और उसे लैटर बक्स में डाल दिया। उस वक्त मुझे ऐसा लगा जैसे मैं नहीं बल्कि पंडित चिन्ताधारी मुझे सजदा कर रहा है और कह रहा है: 'गामा पहलवान, तुम जीते, मैं हारा···'

तीन दिन बाद मैं अपने ड्राइंग-रूम में बैठा फिर खुदा के बारे में सोच रहा था कि इंसान ने खुदा की खोज की या खुदा ने अपनी बोरियत दूर करने के लिए इंसान को खोजा कि मेरा घरेलू नौकर रामधन आया और बोला, 'साहब, डाकिया यह लिफाफा दे गया है।'

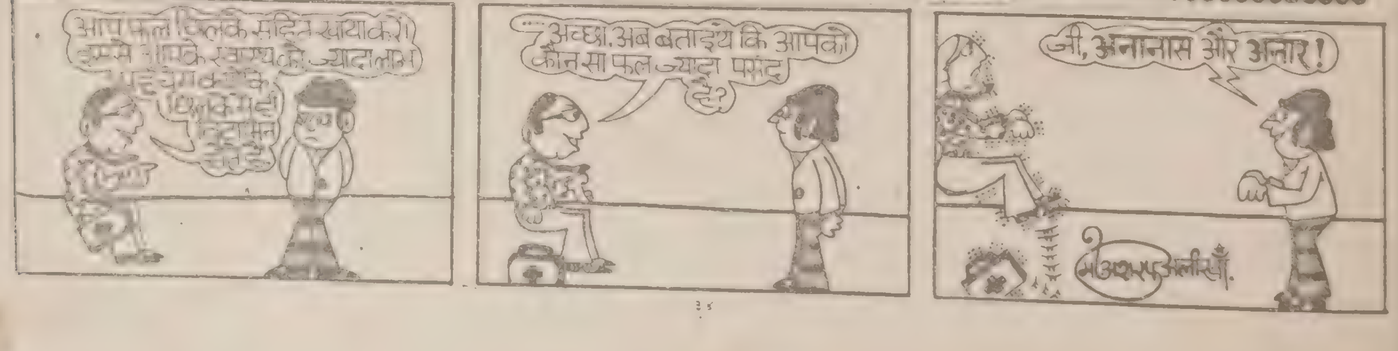
लिफाफे के अन्दर प्रेमिका की शादी का निमन्त्रण नहीं था बल्कि पंडित चिन्ताधारी का खत था। लिखा था:

आदरणीय फिक्र साहब:

मैंने जो अपने मैगजीन का नया अंक आपकी सेवा में भेजा था, वह डाकिए की भूल से, या न जाने किस की लापरवाही से आज मुझे वापस मिल गया। लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप अपनी प्रिय पत्रिका के पढ़ने से वंचित रहें, इसलिए रजिस्टर्ड डाक से आपकी सेवा में फिर भेज रहा हूं।

भवदीय,

चिन्ताधारी



पंचतंत्र



क्या करूं यार, जब से मैना रुठ कर गई है मेरा तो दिल ही नहीं लग रहा है। समझ में नहीं आता कि उसे कैसे मना कर लाऊं ?
तुम ऐसा करो किसी अनुभवी बुजुर्ग जानवर से सलाह ले लो। ऐसे मामलों में तजुर्बा बहुत काम आता है। वह देखो एक कछुआ! काफी घिसा-पिटा लगता है– इसी से पूछ लो।
आदाब अर्ज है ! क्यों साहब आपकी उम्र क्या होगी ?
मेरी उम्र लगभग पचास साल है।
पचास साल ? मेरा दादा ३० साल का बूढ़ा होकर ही मरा था, आपकी तो पचास साल उम्र है, आपके पास अनुभवों का भंडार होगा ? क्या आप मुझे गाइड करेंगे कि मैं अपनी रुठी मैना को कैसे मना लाऊं ?
क्यों नहीं ?
तुम ऐसा करो अपनी मैना के पास जाओ, उसका सिर एक पत्थर पर रखना और ऊपर से एक और बड़ा पत्थर उठा कर सिर पर दे मारना। उसका भेजा और गुस्सा दोनों साथ-साथ खच्च की आवाज के साथ बाहर निकल आयेंगे।
इतना बुजुर्ग होकर यह ऐसी ऊटपटांग बकवास कर रहा है ?
छिः छिः देखो, शर्म भी नहीं आई। बूढ़ा सठिया गया लगता है।
यहां से पूरब में दो बहुत बुद्धिमान उल्लू रहते हैं। चल कर उनसे पूछना चाहिए कि एक बुजुर्ग ने ऐसी वाहियात बात कैसे कह दी ?
हां, सारा जंगल उनकी बुद्धिमानी का कायल है। पश्चिमी देशों में इसीलिए उल्लू को बुद्धिमानी का प्रतीक समझा जाता है।
तोते, यह तो मामूली सी बात है। जिसे तुम बुजुर्ग समझे थे वास्तव में वह बच्चा था। बचपने में उसने शैतानी भरी बात कह दी। तुम्हें पता नहीं होगा कि कछुओं की उम्र दो-अढ़ाई सौ साल होती है। पचास वर्ष की उम्र में कछुआ बच्चा ही होता है।
अच्छा !
शिक्षा—अक्ल और अनुभव केवल उम्र के हिसाब से नहीं आते। यह दोनों चीजें बुद्धि के विकास की गति पर निर्भर हैं।

टैक्स के नये दीवाने रूप

हर वर्ष बजट के समय वित्त मंत्रालय माथा मारता रहता है कि सरकारी आमदनी बढ़ाने के लिए किन चीजों पर टैक्स लगाया जाये। पहले ही सभी चीजें टैक्सों की गिरफ्त में हैं, उन्हें कुछ सूझता नहीं है। हम सरकार को कुछ ऐसे टोटके बता रहे हैं जिनसे सरकार अपनी आय खरबों बढ़ा सकती है और मजा यह कि हमारे सुझाये नए टैक्सों से जनता नाराज भी नहीं होगी, उल्टे लोग दौड़े-दौड़े जायेंगे और खुद जबरदस्ती टैक्स देने लगेंगे।

हसीन टैक्स



सभी सुन्दर महिलाओं के लिये हसीन टैक्स देना अनिवार्य कर दिया जाये। कुरूप स्त्रियों पर टैक्स नहीं होगा। चूंकि सभी स्त्रियां स्वयं को हसीन समझती हैं इसलिये कुरूपता के दाग से बचने के लिये टैक्स देंगी।

सच्चा प्रेम-कर



प्रेमियों में सच्चे प्रेम करने वालों पर कर लगे। चूंकि सभी प्रेमी स्वयं को सच्चा साबित करना चाहते हैं। अतः सभी टैक्स देकर टोकन ले लेंगे और उसे गले में पहन प्रेमिका को गर्व से दिखायेंगे।

कविता



कवियों की हर नयी कविता पर टैक्स लगे, बगैर टैक्स क्लीयरेंस चिट के सम्पादक किसी कविता पर विचार न करें। कवि लोग हंस-हंस कर टैक्स देंगे। टैक्स की क्या बात है कवि तो अपनी कविताओं के लिये जूते और सड़े टमाटर तक सहर्ष झेल जाता है।

हाय हाय-कर



हर बजट के बाद लोग नये टैक्सों के कारण हाय तोबा करने लगते हैं। सरकार हाय-हाय-कर लगाये जिसने भी बजट की प्रतिक्रिया में हाय-हाय की उसी पर हाय-हाय कर ठुक जाये।

मर्द का बच्चा टैक्स



विवाहित पुरुषों पर मर्द का बच्चा टैक्स लगाया जाये। यह टैक्स जोरू के गुलामों को नहीं देना होगा। सभी पुरुष बढ़-बढ़ कर यह टैक्स देंगे ताकि यार लोग जोरू का गुलाम न कह सकें।

लम्बे बाल-कर



लम्बे वालों पर मॉड टैक्स लगे. नवयुवक अपने वालों के लिये खुशी-खुशी टैक्स देंगे। पैसा क्या है लोग फैशन के लिये जान तक कुर्बान कर देते हैं।

भाषण-कर



नेताओं के भाषण पर टैक्स लगे, पन्द्रह मिनट के वाद हर मिनट पर एक रुपया। लोग वाद में तालियां बजायेंगे और जय के नारे अधिक लगायेंगे ताकि नेता और वोले और जनता के कोष में वृद्धि हो।

गपुटेशन टैक्स



कमेटी के नलकों के पास गप्प मीटर लगे। जिन औरतों को गप्पें मारनी हों वह मीटर पर खड़ी होकर गप्प मारें। टायम के हिसाव से मीटर पैसे बतायेगा।

रिश्वत कर



रिश्वत पर से प्रतिवन्ध हटा दिया जाये। हां, सरकारी नौकर जितनी रिश्वत ले उस पर २५% सरकार लेवी ले। नौकरी में तरक्की भी सरकार को दिये लेवी के आधार पर हो। सरकार की इतनी कमाई होगी कि शायद दूसरे सारे टैक्स हटाने पड़ जायें।

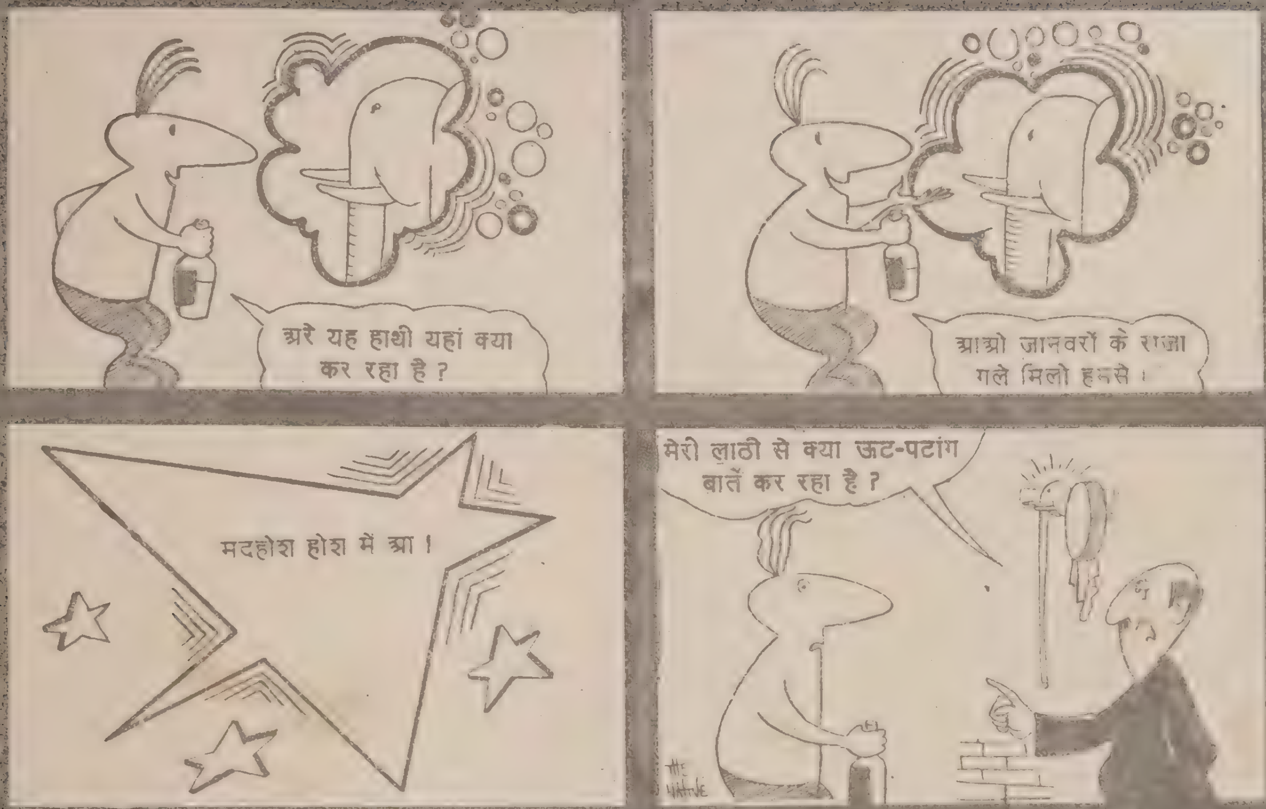
इंगलिश टैक्स



पार्टियों में महिलाओं के कान्वेन्ट इंगलिश में बात करने पर टैक्स लगाया जाये। ये महिलायें इंगलिश में बात करना फखर की बात समझती हैं। वे खुशी-खुशी टैक्स देंगी। पार्टियों में एक-दूसरे पर रौब जमायेंगी, 'यू नो आय पेड फायव हन्ड्रेड चिप्स लास्ट मंथ !"



सवाल यह है ?
● आपको कब पता चला है कि आप विवाहित हैं ?
जब आपको पता चलता है कि आपने दो दर्जन कप खरीदे थे और अब मेहमानों को चाय देने के लिए दो कपों के हैंडल भी साबुत नहीं बचे हैं।
● आपको कब पता चलता है कि आप विवाहित हैं ?
जब आपके हाथ में ऐसी जुर्राबें आ जाती हैं, जिनमें आप किसी सिरे से भी पांव डाल सकते हैं।
● आपको कब पता चलता है कि आप विवाहित हैं ?
जब आप अपने विवाह के अवसर पर ली गई तस्वीरों का एलबम देखते हैं और आपको उससे दीवाना का कोई अंक देखने जितनी प्रसन्नता नहीं होती।
दीवाना
● आपको कब पता चलता है कि आप विवाहित हैं ?
जब आप जेब में हाथ डालें तो वहां की हालत भारत सरकार के खजाने जैसी पाएं।
● आपको कब पता चलता है कि आप विवाहित हैं ?
जब आप फोटोग्राफर से तस्वीर खिचवायें तो उसे बार-बार कहना पड़े कि सुकड़कर पास-पास हो जाइये कैमरे में सबका फोकस नहीं आ रहा है।
आप को कब पता चलता है कि आप विवाहित हैं ?
जब आपके घर में ऐसे मेहमान डेरा जमा लेते हैं, जिनके जाने की कोई तारीख निश्चित नहीं होती।



परिणाम

अ	ग	ड़	म	ब
स		ल		ग
ठ	श		भा	ड़
र	क	म		म
खा		य	हा	

अंक न० ११ में वर्ग पहेली और अंक न० १२ में गुमनाम का सही हल किसी को नहीं आया इसलिए इनाम किसी को नहीं दिया जायेगा.

कलाकार का नाम बिन्दू। अंक १२.

इनकी भी लगे गुमाइश का हल "बेड़ी"

विजेता : राकेश कुमार बजाज। फतेहाबाद हिसार

अंक न० १४ में कार्टून बनाओ का हल

विजेता का नाम :-

अल्पना भाटिया मथुरा

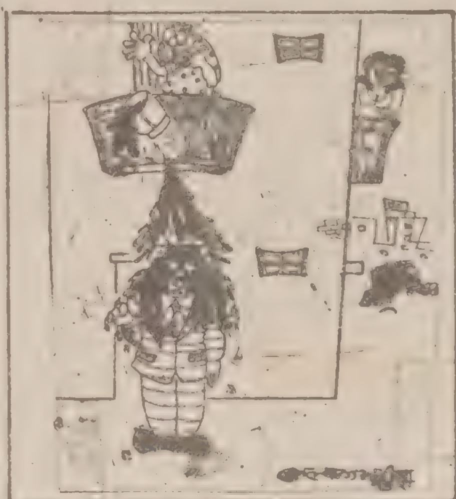
अंक न० १४ में शीर्षक प्रतियोगिता का परिणाम

विजेता :-

अमर नाथ जोतवानी

शीर्षक

सीढ़ियों वाले बिगसे कर ले प्यारे वास्ता,
निकाला है प्रेमियों ने मिलने का नया रास्ता।



रं	ग	रे	लि	या
गा		वा	या	
सि	र	सा		क
या	ई		पा	सा
र	स	न	ला	ई

अंक न० १४, वर्ग पहेली का परिणाम

विजेताओं के नाम :-

1. श्री अजय कुमार मलहोत्रा
2. राजीव कुमार मंजी
3. शशि खन्ना-दिल्ली.
4. अशोक वशिष्ट

पृष्ठ 12 से आगे

को धीरे-धीरे मसलने लगे। दलजीत ने जल्दी से टांगें खींचने का प्रयत्न करते हुए कहा—

'रहने दे नलिनी···तू सो जा।' तू किस लिए परेशान होती है मेरे लिए।

लेकिन पिंडलियां मसलने वाली ने उस की टांगें छोड़ी नहीं और धीरे-धीरे उसकी टांगों को दबाने लगी···दलजीत की आंखें बंद थीं···इससे उसे शान्ति मिली और थकान दूर होने से उसकी पलकें नींद से बोझिल होती गईं—उसने यह भी नहीं देखा कि टांगें नलिनी दबा रही थी या कोई और।

और फिर वह गहरी नींद सो गया।

सुबह उसकी नींद खुली तो उसे अपनी टांगों पर कुछ बोझ अनुभव हुआ। उसने चौंककर गर्दन उठाई—वह करवट से लेटा हुआ था···कोई उसकी टांगें थामे और टांगों पर सिर रखे सो रहा था। एकाएक दलजीत ने हड़बड़ाकर अपनी टांगें खींचते हुए कहा—

'अरे नलिनी···यह क्या किया तूने?'

'टांगें खींचने से सोने वाली की नींद खुल गई और वह हड़बड़ाकर बैठी तो दलजीत के मस्तिष्क को एक जोरदार झटका लगा और उसके होठों से कंपकंपाती आवाज निकली—

'म···म···मोनिका···।'

वह झट उठकर बैठ गया और बोला—

'तुम···यहां।'

'लेटे रहिए···आपकी टांगों में दर्द था··· मैं दवा दूं।' मोनिका ने नम्र स्वर में कहा।

दलजीत एक झटके से उठकर खड़ा हो गया और क्रोध से बोला—

'तुम यहां क्यों आई?'

'क्यों? क्या यह मेरा घर नहीं? क्या मेरा इस घर पर अधिकार नहीं है?'

नलिनी जल्दी से पर्दा खींचकर आ गई और बोली—

'भैया धीरे बोलो—मां जाग जाएंगी।'

'लेकिन नलिनी···यह यहां कैसे?'

'भैया···भाभी तो कल दोपहर ही की आई हुई हैं—कल का भोजन भी उन्होंने ही बनाया था और रात को तुम्हारी टांगें भी इन्होंने दबाई थीं।'

'बहुत खूब···' दलजीत व्यंग से बोला, 'मिस मोनिका अग्रवाल···कहीं खाना बनाते समय आपके हाथों में छाले तो नहीं पड़ गए?'

मोनिका कुछ नहीं बोली···उसने होंठो को दबा के अपने आंसू रोक लिए। नलिनी ने दलजीत से कहा—

'भैया···भगवान के लिए अब तो झगड़ा भूल जाईए—भाभी आपकी पत्नी है।'

'नलिनी···पत्नी वह होती है जिसे पति मन से स्वीकार करे···मैंने मिस मोनिका अग्रवाल की एक इच्छा पूरी की थी···इन्हें पत्नी स्वीकार नहीं किया था···।'

'तो मैं कब कहती हूं कि तुम···सॉरी, आप मुझे अपनी पत्नी स्वीकार कीजिए।' मोनिका भर्राई आवाज में बोली।

'उफफो···' दलजीत ने आश्चर्य और व्यंग से कहा—

'यह मिस मोनिका अग्रवाल बोल रही हैं? शहर के करोड़पति सेठ अग्रवाल की बेटी।'

'जी नहीं···मोनिका सक्सेना···एक मजमजदूर की पत्नी।'

'मिस मोनिका, यह कौन से नाटक का भाग है? क्यों मेरे पीछे पड़ी हो?'

'यह नाटक नहीं···वास्तविकता है···मैं अपने डैडी का घर हमेशा के लिए छोड़ आई हूं।'

'लेकिन आपसे भूल हो गई मिस मोनिका यह घर आपका नहीं—एक मजदूर का है।'

'मैं कुछ नहीं जानती—केवल इतना जानती हूं कि मुझे माँ जी ने आश्रय दिया है।'

'मगर मैं दोपहर तक यहां आपकी सूरत नहीं देखना चाहता हूं समझीं···।'

'भैया···' नलिनी ने झट हाथ जोड़ कर कहा—'भगवान् के लिए थोड़ा धीरे बोलिए···डाक्टर ने कहा था कि माँ को कोई मानसिक खिंचाव नहीं होना चाहिए वरना उन्हें ब्लड प्रेशर हो जाएगा—और माँ ने भाभी को देखते ही सीने से लगाया था··· वह खुशी से रो पड़ी थीं···।'

'किन्तु···नलिनी मैं···'

'भैया···क्या माँ की खुशी तुम्हें अच्छी नहीं लगती?—क्या तुम उनकी खुशी में खुश नहीं हो—क्या तुम्हें उनकी जिन्दगी प्यारी नहीं?'

दलजीत के होंठ भिंचे रह गए।

नलिनी ने फिर कहा—

'ठीक है अगर तुम्हारी खुशी इसी में है तो भाभी वापस चली जाएंगी लेकिन तुम नहीं जानते कि माँ के दिल पर क्या गुजरेगी? और कुछ नहीं तो तुम्हें माँ की खुशी और स्वास्थ्य के लिए ही चुप रहना चाहिए।'

'ठीक है···' दलजीत ने गम्भीरता से कहा, 'जब तक मिस मोनिका का जी चाहे यहां रहें—लेकिन इतना याद रखो नलिनी··· अगर उन्होंने मेरी किसी चीज को हाथ लगाया, मेरे लिए खाना बनाया···या मेरे कपड़े धोए तो···नलिनी···तुम हमेशा के लिए अपने भैया को खो बैठोगी।'

'भैया···!' नलिनी की आवाज कांप गई।

'आप जैसा कहेंगे वैसा ही होगा' मोनिका ने कहा, 'लेकिन इस समय तो भगवान् के लिए चुप रहिए—अगर माँ जाग गईं तो ठीक नहीं होगा।'

दलजीत होंठ भींच कर रह गया। उसने जल्दी-जल्दी हाथ मुंह धोए, अपना साथ का खाना लिया और सोई हुई माँ के चरण छूकर बाहर निकल गया। उसके बाहर जाते ही मां ने आंखें खोल दीं और करवट बदल कर धीमे स्वर में बोलीं—

''चला गया···दिल्लू···।'

'माँ···' नलिनी ने कहा, 'नाटक बिल्कुल ठीक रहा···भैया भाभी पर जरा भी बिगड़े तो तुम झट निढाल हो जाना···।'

'ऐसा ही होगा,' माँ ने कंपकंपाती आवाज से कहा, 'अब मेरी बहूरानी यहां से नहीं जाएगी।'

'मां जी—।'

मोनिका ने सिसक कर मां की गोद में सिर रख दिया।

दोपहर की तेज धूप सिर पर चमक रही थी···दलजीत को अपनी खोपड़ी पिघलती हुई-सी लग रही थी। वह बड़ी देर से परातों में मसाला भर-भर कर बांस की सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर पहुंचा रहा था···

लंच की छुट्टी होने ही वाली थी··· आखिरी परात लेकर दलजीत मसाले की परात ऊपर पहुंचा कर सीढ़ी पर उतरने लगा तो कोई लड़की परात लिए ऊपर चढ़ती दिखाई दी—दलजीत ने हाथ उठा कर जोर से कहा—

'ठहर जा री···पहले मुझे उतर लेने दे···।'

लेकिन लड़की बिना कुछ सुने ऊपर चढ़ती चली आई और दलजीत का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। जब वह आखिरी डंडे पर चढ़ रही थी तो दलजीत ने गुस्से से कहा—

क्रमशः



राकेश कुमार बक्शी, ६०/६२ बी, मालवीय नगर, नई दिल्ली-११, १८ वर्ष, सच्ची मित्रता, करना, परिश्रम करना तथा शायरी करना ।



रामलाल पंवार, श्री सीरवी किसान छात्रावास, वीर दुर्गादास नगर, पाली (राजस्थान), १२ वर्ष, यात्रा करना, पत्र-मित्रता करना ।



अनिल कुमार, पंजाब कास्टिंग, बी० १५-१५६, जी० टी० रोड, मिलर गज लुधियाना, १६ वर्ष, फिल्में देखना, पत्र-मित्रता ।



मोहम्मद रफी 'साबीर', मौ० महमन्दगढ़ी सरोदी बंगला, शाहजहांपुर (उ० प्र०), १६ वर्ष, किताबें पढ़ना, दौड़ना, पत्र-व्यवहार करना ।



नवीन कुमार सेठिया, सुन्दर संस एन्टरप्राइजेज कोतवाली स्ट्रीट, रामपुरा कोटा, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता, कहानी लिखना, पढ़ना ।



महेन्द्र कुमार खपड़िया, शिवल दास भगवान दास गुरु नानक मार्केट, बीकानेर, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्म देखना, उपन्यास पढ़ना ।



अबुल हसन अन्सारी, मौहल्ला छिपयान चकरौता रोड, सहारनपुर (यू० पी०), २० वर्ष, कहानी लिखना, दोस्ती करना, दौड़ना ।



दीपक कुमार (बिहार) द्वारा डा० बी० एल० प्रसाद, चर्च रोड, भागलपुर, १८ वर्ष, अच्छे आदमी की टांगें तोड़ना, अपनी तारीफ करना ।



गिरिजा शंकर प्रसाद, मकान नम्बर ६०० ए रेलवे विछिया कालोनी, गोरखपुर, १८ वर्ष, फुटबाल खेलना, नावल पढ़ना, सुबह को टहलना ।



यश चोपड़ा, दुकान नम्बर १०, राज गुरु मार्केट, रमेश नगर, नई दिल्ली-१५, १७ वर्ष, पत्र-व्यवहार करना, नदी में तैरना ।



महावीर प्रसाद अग्रवाल, अमला टोला चाईबासा, सिंहभूम, १६ वर्ष, फिल्म देखना, लड़कों से मित्रता स्थापित करना, शरीफ बनना ।



सुशील कुमार शर्मा द्वारा श्री गोबिन्द प्रसाद मांझापारा कांकेर, पोस्ट कांकेर, जिला बस्तर (म० प्र०), १६ वर्ष, कहानी लिखना ।



रविन्द्र सिंह बजाज, नकुल रोड, सरसावा, जिला सहारनपुर, (यू० पी०), १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, बैडमिंटन खेलना, दोस्ती बढ़ाना ।



सैयद अब्दुल सत्तार, गजनेर रोड, रोशनी घर, पुरानी लाइन के पास, बीकानेर, २१ वर्ष, रेडियो सुनना, काम नहीं करना ।



दिनेश कुमार शिवहरे, सिवल बस्ती मुरैना, १६ वर्ष, बड़ों का आदर करना, हमेशा सच बोलना, पढ़ना, काम को मन लगाकर करना ।



अशोक कुमार अरोरा, हरियाणा फ्लोर मिल्स गोल मार्केट, रुद्रपुर (नैनीताल), १६ वर्ष, सामाजिक पुस्तक पढ़ना, दोस्ती करना ।



अतुल कुमार कपूरचन्द शाह द्वारा कपूरचन्द जैचन्द कपड़े की दुकान जवाहर रोड, अमरावती, १५ वर्ष, सिक्के जमा करना ।



सतीश कुमार (महाजरी), १०५/७३५, प्रेम नगर, कानपुर, १६ वर्ष, लड़कों से दोस्ती करना, रेडियो सुनना, मैकेनिक बनना ।



पर्वान्द्र मदान ३११, सिन्धी कालोनी, आदर्श नगर, जयपुर, (राज०), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट खेलना, गप्पें मारना ।



सुरिन्द्र कुमार पसरीचा, मकान नम्बर III/४०५, सुभाष कालोनी, करनाल (हरियाणा), १६ वर्ष, फिल्में देखना तथा टी० वी० देखना ।



पूरन बिष्ट, एफ०-३७७-ए० सुदर्शन पार्क, नई दिल्ली-१५, १६ वर्ष, बैडमिन्टन और क्रिकेट खेलना, इंगलिश फिल्म देखना, पढ़ना ।



सैयद आबिद हुसैन, ताजपुर रोड, समस्तीपुर, १६ वर्ष, केवल छक्के मारना, क्रिकेट खेलना, आराम करना और मस्त रहना ।



फहीम हसन कुरैशी, शाह रशीद कुरैशी दिल्ली गेट, हसन मन्जिल मालेर [illegible] १६ वर्ष, शायरी [illegible] हंसना हंसाना ।



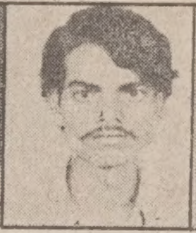
[illegible] अग्रवाल, पुष्प निकेतन, एच०-१६६, अशोक बिहार दिल्ली, १४ वर्ष, आवाजें निकालना, बन्दर की तरह छलांग लगाना ।



बलविन्दर सिंह, पन्त नगर, इण्टर कालिज पन्त नगर, नैनीताल, १६ वर्ष, पढ़ना क्रिकेट खेलना, नाव में बैठना, नदी की सैर करना ।



राजेन्द्र पाल नागपाल, डी०-२३० वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-८, १७ वर्ष, फैशन मारना, बी० आई० डी० करना ।



मुन्नालाल यादव, इब्लिस मैदान के पास गौतम नगर गोंदिया, २३ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, रेडियो सुनना, बच्चों से प्यार करना ।



सतपाल मोंगा, मकान नम्बर ई० ओ० २७५ पीर जोदला बाजार, जालन्धर शहर, १७ वर्ष, बैडमिंटन खेलना, सड़कों पर घूमना ।



सैयद तनवीर महमद, 'तनवीर काटेज' बासपुर (धनबाद), १६ वर्ष, फर्माइश भेजना, आटोग्राफ लेना, पढ़ना मित्रता करना ।



बृजमोहन जी महाजन द्वारा सूरज टैट हाउस ७८ जवाहर मार्ग इन्दौर, २२ वर्ष, व्यंग चित्र बनाना, आकाशवाणी पर प्रोग्राम देना ।



धनिया साहब, द्वारा मिनर्वा सिनेमा बिल्डिंग, दिल्ली, २२ वर्ष, सी० आई० डी० करना, फिल्मों की जानकारी करना, फिल्म देखना ।



कमलजीत, श्री बिहारी लाल पुरानी सराय खन्ना (लुधियाना), १७ वर्ष, गाना गाना, बाजा बजाना, नाचना और खूब हंसाना ।



हरनारायण यादव द्वारा बनेचंद पूनमचंद छाजड़, पो० नोहर, जिला श्रीगंगानगर (राज०), १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

दीवाना फ्रैंडस क्लब

दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये । मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा । लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेन्ड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लि[illegible] न भूलें ।

हमारा पता : दीवाना-८-ब बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ________

पता ________

आयु ________ शौक ________

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित । प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता ।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र ईश्वर्ज भूषण पं० हंसराज शर्मा

१५ मई से २१ मई ७८ तक

मेष : संघर्षपूर्ण होते हुए भी यह सप्ताह अच्छा रहेगा, वैसे बीच-बीच में कुछ कठिनाइयां तो आयेंगी, परन्तु बाद में वातावरण अनुकूल हो जायेगा, कोई शुभ सूचना मिलेगी, प्रयत्न सफल रहेंगे ।

वृष : अच्छा होते हुए भी यह सप्ताह विशेष लाभप्रद न रहेगा, किसी निकट सम्बन्धी से परेशानी बनेगी, घरेलू समस्याएं भी पहले की तरह ही रहेंगी, कारोबार की दृष्टि से सप्ताह लाभप्रद है ।

मिथुन : काफी संघर्षपूर्ण सप्ताह रहेगा, दौड़धूप भी काफी रहेगी और आप अपने आपको कामों में काफी व्यस्त पायेंगे, व्यापार से लाभ ठीक समय पर होता रहेगा जिससे आपको अपनी योजनाओं में सफलता मिलेगी ।

कर्क : व्यापारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो सप्ताह लाभप्रद रहेगा, परन्तु इन दिनों व्यर्थ का क्लेश या झगड़ा हो सकता है जिससे मानसिक परेशानी पैदा होगी, स्वास्थ्य का ध्यान रखें, जल्दबाजी में कोई काम न करें ।

सिंह : संघर्षपूर्ण होने पर भी इस सप्ताह को अच्छा कहा जा सकता है, विरोधी अधिक परन्तु सामना न कर पायेंगे, किसी प्रिय व्यक्ति से मिलाप होगा, परिश्रम अधिक और व्यर्थ का भी रहेगा ।

कन्या : इस सप्ताह में समस्याएं एवं उलझनें पैदा होती रहेंगी जिसके कारण मानसिक चिन्ता बनी रहेगी, कामकाज की स्थिति संतोषजनक रहेगी, परिवार से सुख, व्यय यथार्थ होने पर भी अधिक महसूस होगा ।

तुला : इन दिनों कठिनाइयां आती तो रहेंगी परन्तु स्वतः ही समाप्त हो जाया करेंगी, वैसे यह सप्ताह पहले से अच्छा है, आय में वृद्धि कारोबारी कामों में भी रुचि बनेगी, परिश्रम से अधूरे काम पूरे होंगे ।

वृश्चिक : सप्ताह अच्छा रहेगा, इस दौरान समस्याएं तो रहेंगी परन्तु प्रयत्न करने पर आपको अपनी योजनाओं में सफलता मिल जायेगी, व्यापार में सुधार तथा लाभ में वृद्धि होगी, यात्रा में सुख मिलेगा ।

धनु : पिछले दिनों की तुलना में यह सप्ताह काफी अच्छा रहेगा, धार्मिक एवं शुभ कामों की ओर झुकाव रहेगा, व्यय-यथार्थ, आय में वृद्धि,.मनोरंजन आदि में समय अच्छा व्यतीत होगा और विशेष व्यय करना पड़ेगा ।

मकर : सप्ताह है तो लाभप्रद परन्तु धन की प्राप्ति काफी देर बाद और परिश्रम करने पर ही मिल पाएगी, मन पर व्यर्थ की बातों का बोझ सा रहेगा, फिर भी भाग्य आपका साथ देगा, वातावरण ठीक होगा ।

कुम्भ : सप्ताह अच्छा रहेगा, विगत समय में किए कामों के परिणाम मिलने लगेंगे, यात्रा अचानक ही करनी पड़ सकती है, समाज के कामों में मान मिलेगा, प्रयत्न करने पर सफलता मिलेगी ।

मीन : इन दिनों कठोर परिश्रम करने पर ही कामों में सफलता मिल सकेगी, आय यथार्थ, व्यय कुछ अधिक होगा, व्यापार की स्थिति तकरीबन पहले समान ही रहेगी, यात्रा की आशा है

रजनी शर्मा

विजय भारद्वाज

रजनी शर्मा नवोदित हीरोइन हैं और अन्य नवोदित कलाकारों की तरह फिल्मों में प्रवेश के लिये संघर्ष कर रही हैं। जितनी इनके नाम में मिठास है उससे भी ज्यादा यह सुन्दर हैं। इकहरा बदन, चंचल आंखें, काले घने बाल इनकी सुन्दरता में चार चाँद लगा देते हैं।

फिल्मों में प्रवेश पाने के लिए इन्होंने छोटी उम्र में ही फैसला कर लिया था। यह अभिनेत्रियों में मीना कुमारी की और अभिनेताओं में देव आनन्द की 'फैन' हैं। इनकी अभी भी हार्दिक इच्छा यही है कि देव आनन्द के साथ किसी फिल्म में इन्हें चांस मिल जाये। कुछ एक छोटी-मोटी फिल्मों में एक्स्ट्रा रोल निभा भी चुकी हैं लेकिन यह फिल्मों में प्रमुख भूमिका निभाकर बतौर हीरोइन प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहती हैं।

रजनी शर्मा

स्कूली जीवन से ही इनकी नाटकों, ड्रामों व स्टेज के अन्य कार्यक्रमों में भाग लेने की इच्छा रही है। बतौर स्टेज कलाकार के यह काफी प्रसिद्ध भी रहीं। फिल्मों में प्रवेश पाने के लिए टांकेबाजी की आवश्यकता होती है या फिर भाग्य की बात होती है। वरना छोटे-छोटे सीढ़ी चढ़कर हीरोइन तक पहुँच पाना अत्यन्त कठिन काम है। लेकिन रजनी इन सभी कठिनाइयों ... सामना कर रही है, उन्हें किसी ... शिकायत नहीं है। एक छोटी-सी ... में हमने उनसे पूछा, 'क्या कारण ... अब तक कोई प्रमुख रोल नहीं ... इसमें दोष किसका है? हालांकि ... फिल्म क्षेत्र में आये लगभग डे... गया है।'

'मैं किसी को दोष नहीं ... उचित समय की इन्तजार में हूं। ... की चमचागीरी मैं नहीं कर ... अपनी कला के बल पर रोल प्राप्त ... इसमें यदि मुझे दोषी कहा जाये ... मुझे दोषी कह सकते हैं। नवोदित ... को आज जितनी दिक्कतें उठानी ... उतना ही वह प्रसिद्धि पाने के बा... ताओं को परेशान करते हैं क्योंकि ... 'टिट फॉर टैट' वाला हो जाता है ... ने आंखें घुमाते हुए राज की ... ही दी।

'आपके शौक क्या-क्या हैं?'

'ताश खेलने के अलावा मैं (मछली पकड़ने) भी करती हूं ... मछली पकड़ते समय मुझे एक है ... जरूरत होती है, यानी मछली कांटे ... तो लेती हूं लेकिन कांटे में से उसे ... व... री हवा खराब हो जाती है ... ने ...ाते हुए जवाब दिया।

फिल्म "खून का बदला खून" में बिन्दू, अ... और पद्मा खन्ना



कुलदीप कौर

रजनी शर्मा

छाया: जगमोहन

दीवाना



Regd. No. D (D) - 275

परोपकारी



बात-बे-बात की

